इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

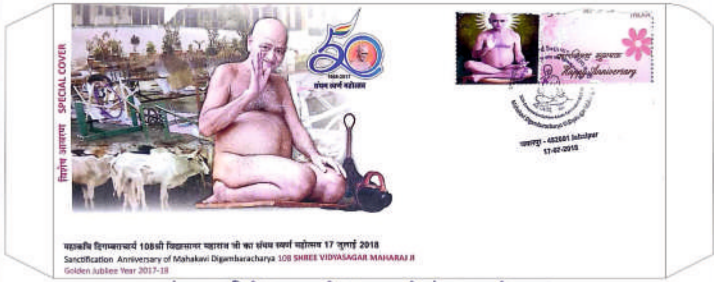

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		सितम्बर 2024	
16	सोमवार	त्रयोदशी	धनिष्ठा
17	मंगलवार	चतुर्दशी/पूर्णिमा	शतभिषा
18	बुधवार	प्रतिपदा	पूर्वाभाद्रपद
19	गुरुवार	द्वितीया	उत्तराभाद्रपद
20	शुक्रवार	तृतीया	अश्विनी
21	शनिवार	चतुर्थी	भरणी
22	रविवार	पंचमी	कृतिका
23	सोमवार	षष्ठी	रोहिणी
24	मंगलवार	सप्तमी	मृगशिरा
25	बुधवार	अष्टमी	आर्द्रा
26	गुरुवार	नवमी	पुनर्वसु
27	शुक्रवार	दशमी	पुष्य
28	शनिवार	एकादशी	आश्लेषा
29	रविवार	द्वादशी	मघा दिन-रात
30	सोमवार	त्रयोदशी	मघा
		अक्टूबर 2024	
1	मंगलवार	चतुर्दशी	पूर्वाफाल्गुनी
2	बुधवार	अमावस	उत्तराफाल्गुनी
3	गुरुवार	प्रतिपदा	हस्त
4	शुक्रवार	द्वितीया	चित्रा
5	शनिवार	तृतीया	स्वाती
6	रविवार	चतुर्थी	विशाखा
7	सोमवार	चतुर्थी	अनुराधा
8	मंगलवार	पंचमी	ज्येष्ठा
9	बुधवार	षष्ठी	मूल
10	गुरुवार	सप्तमी	पूर्वाषाढ
11	शुक्रवार	अष्टमी	पुष्य दिन-रात
12	शनिवार	नवमी	पुष्य
13	रविवार	दशमी-एकादशी	आश्लेषा
14	सोमवार	द्वादशी	मघा
15	मंगलवार	त्रयोदशी	पूर्वाफाल्गुनी

तीर्थंकर कल्याणक

17 सितम्बरः भगवान वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक
19 सितम्बरः भगवान नमिनाथ गर्भ कल्याणक
03 अक्टूबरः भगवान नेमिनाथ ज्ञान कल्याणक
11 अक्टूबरः भगवान शीतलनाथ मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 सितम्बरः दशलक्षण व्रत पूर्ण, अनंत व्रत पूर्ण, अनंत चतुर्दशी, रत्नत्रय व्रत पूर्ण
18 सितम्बरः क्षमावाणी, षोडशकारण व्रत पूर्ण मेघमाला व्रत पूर्ण
23 सितम्बरः रोहिणी व्रत
23 सितम्बरः मुक्तावली व्रत
30 सितम्बरः मुक्तावली व्रत
13 अक्टूबरः मुक्तावली

सर्वार्थ सिद्धि

19 सितम्बर : 08/04 बजे से 30/03 बजे तक ।
20 सितम्बर : 06/03 बजे से 26/43 बजे तक ।
23 सितम्बर : 06/04 बजे से 30/04 बजे तक ।
26 सितम्बर : 06/05 बजे से 30/05 बजे तक ।
02 अक्टूबर : 12/33 बजे से 30/08 बजे तक ।
05 अक्टूबर : 06/08 बजे से 21/33 बजे तक ।
07 अक्टूबर : 06/09 बजे से 26/25 बजे तक ।
11 अक्टूबर : 29/25 बजे से 12-28/27 बजे तक ।
15 अक्टूबर : 22/08 बजे से 30/13 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः अक्टूबर 1,9,14
मशीनरी प्रारंभ : सितम्बर-16 अक्टूबर 3,4,13
वाहन खरीदनेः सितम्बर-16 अक्टूबर 3,5,14

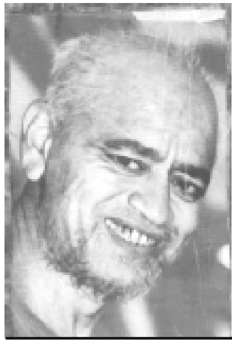

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 305 • सितम्बर 2024
• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• रिसोर्ट में विवाह एक और सामाजिक बीमारी 08
• जैन दर्शनानुसार उपयुक्त गीजर का चुनाव 10
• कैथूली की प्राचीन जिनप्रतिमायें (प्रथम स्तवन) 16
• विशेष जीवन का अनुशासन है योग 19
• सराग चारित्र और गुणस्थान व्यवस्था 21
• सदी बीस में प्रवाहित रत्नत्रय त्रिवेणी आगे भी रहेगी प्रवाहमान 24
• जन्म शताब्दी एवं रजत जयंती वर्ष समारोह संपन्न 27
• भारतीय पत्रकारिता में जैन समाज का अवदान 40
• वीर मार्तण्ड चामुण्डराय 42
• विश्व महासागर दिवस 46
• **वरिष्ठ नागरिकः** पुस्तकों से मित्रता कीजियें 55
• स्वामी कार्तिकेय अनुप्रेक्षा में प्रतिपादित अनित्य 56
• शरीर मे सोडियम का महत्व साधारण सोडियम काम आसाधारण 59

बाल कहानी

• प्रतिशोध की दुर्भावना 62

कविता

• टूटा सत्ता सपना 09
• त्रिभुवन की मैया 23
• इनसे अपनी इज्जत सारी 29
• परम ज्योति जयवंत रहे 41
• रखो सकोरा 45
• नवमंजिल को पायेगा 48

कहानी

• शीला का स्वप्न 50

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 15
चलो देखें यात्रा : 29 • आगम दर्शन :30 • माथा पच्ची : 31 • पुराण प्रेरणा : 32
• कैरियर गाइड : 33 • दुनिया भर की बातें : 34 • इसे भी जानिये: 38
•दिशा बोध : 39 • हमारे गौरव : 54 • वरिष्ठ नागरिक : 55 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं ।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, लोकसभा में राहुल गाँधी प्रतिपक्ष नेता ने हिंदू धर्म के भगवान की फोटो हिन्दू को हिंसक और नफरत प्रसारक बताया इससे उदयनिधि स्टीफन ने हिन्दू धर्म को डेंगू जैसा बताकर हिन्दू धर्म को समाप्त करने की बात कहीं इस तरह से हिन्दू धर्म पर अनावश्यक टिप्पणी करना भारतीय मूल संस्कृति के प्रति आगे आने वाली पीढ़ी को भटकाने का ही कार्य होगा। भारतीय धर्म संस्कृति के भगवत् पुरुष सुख शांति समृद्धि सदाचार सद्विचार का ही उपदेश देते आये हैं उनके विचार भी प्रासंगिक हैं। उनके संदर्भ जो मूलतः हिन्दू नहीं वे भ्रामक विचार प्रस्तुत करते हैं हिन्दू के प्रति नफरत पैदा करना ही इनका लक्ष्य है वोट के खातिर ये कुछ भी बोल सकते हैं।

ओमप्रकाश जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, श्री महाधवल में क्या है? शीर्षक से अगस्त 2024 संस्कार सागर के अंक में यद्यपि यह लेख जून के माह में दिया जाता तो और अधिक प्रासंगिक होता क्योंकि जून के माह में श्रुतपंचमी पर्व भी आया था ठीक है सिद्धांत ग्रंथों का कुशल सम्पादन करने वाले प्रोफेसर हीरालाल जी ने इस लेख को लिखकर जिनवाणी और जिनशासन की प्रभावना में बड़ा ही योगदान दिया है। लेख बहुत श्रम साध्य है इसी शैली से यदि अन्य ग्रंथों के संबंध में लिखा जाये तो जिनशासन प्रभावना में अलग ही महत्त्वपूर्ण कार्य होगा सिद्धांत लेख का प्रकाशन करने के लिये बहुत बहुत साधुवाद।

रजनी जैन, दिल्ली

• सम्पादक महोदय, विगत माह हाथरस के जिले पुलराई गाँव में नारायण सरकार के सतसंग सभा में भगदड़ मचने से 130 लोगों की मौत हुई तथा सैकड़ों लोग घायल हुये 100000 लोगों की उपस्थिति सभा में परन्तु 70 ही पुलिस जन थे। राज्य प्रशासन की चूक हो अथवा जिला प्रशासन की या फिर आयोजकों की परन्तु मौत तो गरीबी की हुई। जिसके प्रिय परिजन बिछुड गये उनके दर्द की भरपाई सहयोग राशी से नहीं हो सकती है संवदेन शील उनके प्रति हमारी सरकारें कब बनेगी। जिनधर्म गुरुओं से हम अनुशासन का पाठ सीखने गये उनसे यदि हमें भगदड़ मिले तो इसे हमारा दुर्भाग्य ही कहना होगा। राज्य सरकारों को चाहिये कि किसी भी धार्मिक आयोजनों पर सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करें।

श्रीमती आशा जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर का अगस्त 2024 का वर्षा योग विशेषांक देखा आवरण पृष्ठ की सज्जा देखकर मैंने पूरा अंक पढ़ा कैरियर गाईड स्तम्भ में पत्रकारिता में भविष्य पर जब मेरी नजर पड़ी तब मुझे लगा कि पत्रिका की सोच खूब गहरी है युवावर्ग को मार्गदर्शन देने में सच्ची रूचि है वर्षायोग में कौन से साधु कहाँ है उनके सम्पर्क का पता और मोबाईल नम्बर तक संग्रहीत करना बहुत मेहनत का काम है। ब्र. जिनेश मलैया जी का श्रम बहुत बहुत साधुवाद के योग्य है। ज्ञानवर्धक लेखों के साथ गुनगुनाती कविताएँ इस अंक की अपनी अलग ही विशेषता है। कहानी मर्ज कर्ज फर्ज पढ़कर तो मजा आ गया। कुल मिलाकर अंक संग्रहणीय पठनीय है।

सविता जैन, भोपाल

भक्ति तरंग
आहारदान की महिमा

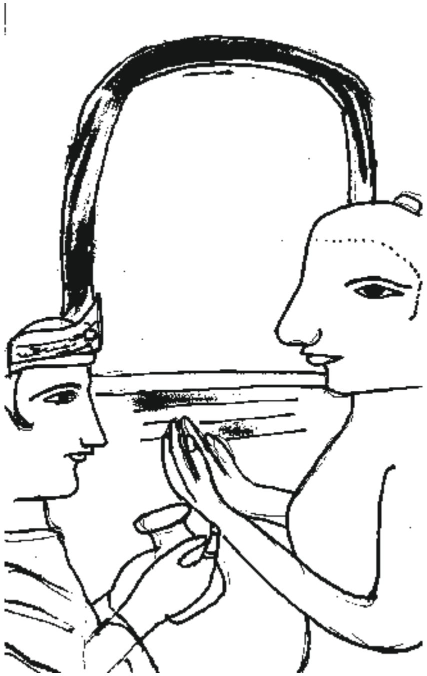

धन धन श्री श्रेयांशकुमार।
तीर्थदान करतार ।। टेक ।।
प्रभु लखि जाहि पूर्वश्रृत आई,
चित हरषाय उदार।
नवधा भक्ति समेत इक्षुरस,
प्रासुक, दिया अहार ।।1।।
रतनवृष्टि सुरगन तब कीनी,
अमित अमोघ सुधार।
कल्पवृक्ष पहुपन की वर्षा,
जहँ अलि करत गुँजार ।।2।।
सुरदुंदुभि सुंदर अति बाजी,
मन्दर सुगंधि वयार।
धन धन यह दाता इमि नभ में,
चहुँ दिशि होत उचार ।।3।।
जस ताको अमरी नित भावत,
चन्द्राज्ज्वल अविकार।
भागचन्द्र लघुमति क्या वरनै,
सो तो पुन्य अपार ।।4।।

वे राजा श्रेयांस (कुमार) धन्य है जिन्होंने मुनीवर ऋषभदेव की मुनिचर्या को देखकर अपने पूर्वभव का स्मरण हो आया। उन्होंने नवधा भक्तिसहित प्रासुक विधि से मुनि ऋषभदेव को गन्ने के रस का आहार कराया, जिससे उनके चित्त में अत्यन्त हर्ष हुआ।

उस आहादान की महिमा हेतु देवों ने श्रेष्ठ रत्नों की निरन्तर (धाराबद्ध) वर्षा की। कल्पवृक्षों के सुगंधित पुष्पों की वर्षा की जिन पर भँवरे गुंजार करते हुये मँढरा रहे थे।

देवों ने दुंदुभि नाद किया। मन को प्रिय व सुहावनी लगने वाली, सुगन्ध से भरी मन्द-मन्द हवा बहने लगी। अर्थात् आहारदान के प्रभाव से पंच आश्चर्य (पाँच आश्चर्यकारी घटनाएँ) प्रकट हुये। सारे लोक में, सभी उस दाता (राजा श्रेयांस) को धन्य हो-धन्य हो कहकर सराहने लगे।

देवाङ्गनाओं ने जिनेन्द्र के चन्द्रमा की विकार रहित, धवल कांति के समान यश का गुणमान किया। कविवर भागचन्द्र कहते हैं कि मैं अल्पमति उस अपार पुण्य का कैसे व किस प्रकार वर्णन करूँ ?

अर्थात् वे उस अपार पुण्य का कथन करने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं।

संस्कार प्रवाह

ऐसे मनायें पर्यूषण

पर्व भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। प्रायः भारत के सभी पर्व धार्मिक एवं त्याग, तप और संयम का संदेश लेकर आते हैं । पर्वाधिराज पर्व पर्यूषण पर्व जैनों का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व है। सबके पर्व मनाने के तरीके भिन्न होते हैं । वसन आभूषण तो सब बदल लेते हैं परन्तु पापों की भूमि यदि नहीं बदल पाई तो पर्यूषण पर्व की सफलता में सदैव संदेह रहता है। मात्र भाषा और भाषण प्रवचन तक पर्यूषण को सीमित कर देना पर्व के साथ सबसे बड़ा अन्याय होगा मनोरंजन करके युवावर्ग जो आकर्षित करना कोई गलत काम नहीं है किन्तु मनोरंजन को ही प्रधानता देना अनुचित ही होगा।

आओ हम पर्यूषण पर्व के दस दिनों में इतना तो अवश्यक कर सकते हैं जीव हिंसा को टालकर प्रत्येक प्राणी पर करूणा धारण करना आपके लिये आवश्यक होगा करूणा धर्म को धारण करने के लिये आपको दो कार्य करना है। प्रथमकार्य रात्री भोजन का परिहार करना द्वितीय कार्य छानकर पानी पीना तथा अभक्ष्य पदार्थों के भक्षण से बचना इस करूणा धर्म का पालन करने के लिये घर के बने ही भोजन की श्रेष्ठता को स्वीकार करना होगा। साथ जंक फूड पैकिंग के खाद्य सामग्री का परिहार करना होगा।

अपने जीवन में आई कटुता को भुलाकर वैर-भाव को क्षमा मैत्री में बदलकर आप अपने पर्व मनाने की सार्थकता सिद्ध कर सकते हैं प्रतिशोध की दुर्भावना का त्याग करने के बाद मैत्री और क्षमा को जीवंत बनाया जा सकता है। पर्व समाप्ति के बाद आप तीर्थ यात्रा पर अवश्य ही निकलेंगे तो हमारी आप से एक अपेक्षा है कि आप अत्यंत प्राचीन तीर्थ शिरपुर अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की यात्रा करके पर्यूषण पर्व की सफलता सुनिश्चित करें और क्षमादि धर्म का महत्त्व समझकर इन्हें अपने जीवन में अवश्य धारण करें।

साधुओं के संबंध में आचार्य विद्यानंद जी के विचार

शिथिलाचार रोकने के लिये है सुदृढ सामाजिक संगठन

❊ डॉ. अनिल कुमार जैन, बापूनगर जयपुर ❊

''तीर्थंकर'' (इंदौर) के जुलाई-अगस्त 1987 के अंक में आचार्य विद्यानंद जी और डॉ. नेमीचन्द्र जैन की बातचीत प्रकाशित हुई थी। आचार्य विद्यानंद जी ने आचार्यों और साधुओं के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये थे। इस बातचीत के आधार पर आचार्यों और साधुओं के संबंध में उनके कुछ विचार यहाँ प्रस्तुत हैं।

आचार्य कैसा हो ?

आचार्य परमेष्ठी में अरिहंत, सिद्ध और आचार्य के क्रम में आचार्य का नंबर तीसरा है। शास्त्रों में बताया है कि आचार्य शिक्षा-दीक्षा प्राशचित आदि का वेत्ता होता है और साधु संघ का मार्गदर्शन करता है। समाज को भी रास्ता दिखाता है। साधु अपने आचरण में जितने दृढ़ होते हैं समाज भी उसी अनुपात में अपने आचरण पर दृढ़ रहता है। आचार्य के मुख्य कर्तव्य-अपने आचार को ऊँचा रखते हुये साधु संस्था को आदर्श रूप देना, अपने रत्नत्रय (सम्यर्क दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र) को विकसित करते हुये समाज का थोड़ा सदुपयोग कर अपने साधु संघ को रत्नत्रय में सुस्थिर/अविचल रखना, उन्हें प्रायश्चित बताकर शुद्ध रखना, शिक्षा-दीक्षा देना, पढ़ना/स्वाध्याय कराना, और फिर एक बात और कही ''संघस्थ संतुष्टिकर''- इस तरह का व्यवहार कि सारा संघ संतुष्ट रहे, यह नहीं कि किसी शिष्य के प्रति अधिक स्नेह और किसी के प्रति कम। आचार्य के लिये सबके साथ समता भाव रखना जरूरी है।

दीक्षा किसे देनी चाहिये

आचार्य जब किसी को दीक्षा देते हैं तो अनेक तथ्यों की इंक्वायरी/जानकारी करते हैं। जब जब कोई सोना खरीदना है तब यह नहीं चलता कि पीतल पीला है तो उसे ही सोना समझ कर खरीद लें, पहले कसौटी पर कसते हैं तब क्रय करते हैं। ऐसे ही आचार्य शिष्यों को दीक्षा देने से पूर्व परखते हैं।

शास्त्रों में एक बात कही कि मुनि दीक्षा हर किसी को नहीं देना है। जो बहरा हो, गूंगा हो, बालक हो, अतिवृद्ध हो, बहुत बड़ा कोई रोग उसे हो, सरकार के किसी क्रिमिनल केस में दंडित हुआ हो, या अपने पीछे कोई कर्ज छोड़कर आया हो उसे दीक्षा नहीं देनी चाहिये। माता-पिता/परिवार की अनुमति जिसे मिल गई हो उसे ही दीक्षा देनी चाहिये। कई दोष बताए हैं- जिसकी स्मृति बहुत कमजोर हो, याद नहीं रखता हो, जिसको बार-बार झूठ बोलने की आदत हो या चोरी करने की आदत हो उसे भी दीक्षा नहीं देना है। दीक्षा देने से पूर्व दीक्षार्थी के आचरण की पूरी तहकीकात करनी चाहिये। पहले पात्रता की कसौटी पर कसें और फिर उसे संघ में रखकर क्रमशः अध्ययन कराएं, पढ़ाएं, बताएं कि शास्त्र कैसे रखना, वेष्टन कैसे बांधना, स्वाध्याय के लिये कैसे बैठना इत्यादि का प्रशिक्षण उसे बराबर दिया जाना चाहिये, और फिर यह भी देख लेना चाहिये कि इस सबके लिये उसकी शारीरिक क्षमता है या नहीं , परख लेना चाहिये कि उसका शरीर बल कैसा है मुनि धर्म को आगे चलकर ठीक से निभा सकेगा या नहीं । दीक्षा के संबंध

में ''धवला'' कि तेरहवीं पुस्तक, प्रवचनसार तथा अन्य इतर ग्रंथों में कई महत्त्व कि बातें कही गई हैं, किन्तु इधर इन सब पर कोई लक्ष्य नहीं दे रहा है, यह दुःख और चिंता का विषय है।

आचार्य बनने की होड़ गलत

हमारी जो अविछिन्न परंपरा चली आ रही है उसमें कई व्यवधान आ गये, संस्थान भी बहुत क्षीण हो गये और जब दोबारा साधु संस्था में नवचेतना आई तो यह धारणा बन गई कि कोई साधु आचार्य बनने के बाद ही बड़ा हो सकता है, अध्ययन, मनन नहीं, चिंतन नहीं, योग्यता नहीं, वय नहीं और दीक्षा दे दी, स्वयं आचार्य बन बैठे। यह परिपाटी ठीक नहीं है। इसे रोकना चाहिये।

साधु को ज्ञान अर्जित करते रहना चाहिये

जिस प्रकार एक वृक्ष धीरे-धीरे बारिश, धूप और बाहरी वातावरणों से पक जाता है और फिर फल देता है, उसी तरह साधु होना चाहिये। साधु को वृक्ष की तरह होना चाहिये। आज वृक्ष लगायें और कल वह फल दे दे, ऐसा नहीं हो सकता, और हो सकता है कि गर्मी पड़ने से वह वृक्ष सूख जाये। और थोड़ी सी असावधानी हो जाये तो विफल हो जाये। जैसे सारे वृक्षों को प्रतिकूलताओं से पार पाना होता है सभी ऋतुओं को, वैसे ही साधुओं को भी अपनी चर्या रूपी ऋतुओं को, वातावरण रूपी ऋतुओं को पार करने के लिये अनुभव लेते रहना चाहिये। शास्त्रों में ''धवलाकार'' ने बताया है कि ज्ञान प्राप्त करने/ शिक्षा के लिये पहली शर्त यह है कि प्रथम चरण का ज्ञान गुरु से लिया जाए, उसके बाद शिष्य स्वयं अपनी बुद्धि से आत्म चिंतन करें । तीसरे चरण में वह अनुभवी विद्वानों से उनका पाक कर लें, और चौथे चरण में काल पाकर परिपक्व अनुभव प्राप्त करे- काम का यही है। पक्व-ज्ञान आत्म/स्व हित के लिये कारण है और दूसरों के लिये भी। साधु जीवन में केवल किताबी ज्ञान से गाड़ी नहीं चल सकती, यहां तो अनुभव पुष्ट ज्ञान चाहिये। वह ज्ञान प्राप्त करना है तो अनुप्रहर साधना करे। जब तक कष्ट नहीं उठाएगा, परिश्रम/पुरुषार्थ नहीं करेगा, तब तक ज्ञान टिकेगा नहीं। ज्ञान वास्तव में वही टिकता है जिसे कष्ट से प्राप्त किया जाता है और फिर परिपक्व हो जाने के बाद सरस हो जाता है। कच्चा फल खट्टा होता है, उसे खाते ही मुंह टेढ़ा हो जाता है। इसलिये ज्ञान में परिपक्वता आनी चाहिये। ज्ञान का उपयोग आत्महित में कर सकते हैं। आत्म-कल्याण के लक्ष्य को भी भूलना नहीं चाहिये। अपना हित करते हुये भी आप परहित में सहयोगी बन सकते हैं, मार्ग दिखा सकते हैं।

लाचारी में साधु बनना अनुचित

साधु तीन प्रकार के होते हैं- एक साधु ''होते'' दूसरे ''बन'' जाते हैं इसे ''बनाए'' जाते हैं। जो ''होते'' हैं वे संस्कारित होते हैं, उन्हें देखकर आदर्श साधु बना जा सकता है। जो ''बनाए'' जाते हैं वो न तो अपना कल्याण कर पाते हैं और न दूसरों का। जो किसी लाचारी या व्यवस्था में ''बन'' जाते हैं वे भी ठीक नहीं हैं।

साधुओं में शिथिलाचार रोकने के लिये आवयश्क है सुदृढ़ सामाजिक संगठन- सामाजिक संगठन न होने से अब साधु संस्था में भी शिथिलतायें आने लगी हैं। यदि इन्हें दूर करना है तो सामाजिक संगठन बहुत जरूरी है। समाज बंट जाता है तब साधु भी शिथिलाचार का रास्ता अपना लेता है। सामाजिक संगठन के बिना हम जीवित नहीं रह सकते । इसके मजबूत रहने से साधु संस्था भी मजबूत होती है।

गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी की समाधि सल्लेखना

❊ सुषमा जैन, भिलाई (छत्तीसगढ़) ❊

बुंदेलखण्ड की धरा धन्य हुई, जहाँ आचार्य श्री विरागसागर जी जैसे सन्त ने जन्म लिया और पूरे भारत में जैन धर्म की पताका फहराई। परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी बुंदेलखंड केसरी, वात्सल्य रत्नाकर, सहज सरल व्यक्तित्व के धनी एक विराट संघ के नायक के रूप में जाने जाते हैं। 4 जुलाई 2024 को प्रातः काल में उनकी समाधि का समाचार मिला तो मन बहुत व्यथित हो गया। ऐसा लगा मानो श्रमण संस्कृति का एक दैदीप्यमान नक्षत्र ही अस्त हो गया हो। इतनी जल्दी जैन समाज की दो विभूतियों का हमारे बीच से चले जाना सचमुच जैन समाज के लिये अपूरणीय क्षति है, जिसकी भरपाई असंभव सी लगती है।

आचार्य श्री की जन्म से समाधि तक की यात्रा गुरुवार को शुरु होकर गुरुवार को ही समाधि पूर्वक समाप्त हुई। 17 वर्ष की आयु में आपने तपस्वी सम्राट श्री सन्मतिसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा लेकर संयमी जीवन का प्रारंभ किया। फिर 20 वर्ष की आयु में औरंगाबाद में निमित्त ज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ग्रहण करके क्षुल्लक पूर्ण सागर से मुनि श्री विरागसागर जी बने। निर्दोष चर्या, सबके साथ वात्सल्य पूर्ण व्यवहार, निरंतर चिंतन मनन अध्ययन में रत रहने वाले श्री विरागसागर जी को 29 वर्ष की आयु में द्रोणगिरि क्षेत्र पर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया।

माँ सरस्वती की आराधना करते हुये पूर्व आचार्यों के ग्रंथों की संस्कृत में टीका करके, अनेक शोधात्मक रचनाओं के साथ लगभग 150 पुस्तकें लिखकर आपने सरस्वती भंडार को समृद्ध किया। साथ ही आपसे दीक्षित मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं का विशाल संघ है। आचार्य श्री विरागसागर जी ने संघ में 9 मुनिराजों को आचार्य बनाया। आपके शिष्यों एवं प्रशिष्यों को मिलाकर संघ में 500 से अधिक पिच्छी धारी हैं। आपके संघ के सभी आचार्य माँ सरस्वती भंडार को अपनी लेखनी से समृद्ध कर रहे हैं। आचार्य श्री की प्रेरणा से व्यसन मुक्ति, शाकाहार अभियान से समाज में नई क्रांति आई। आपने यति सम्मेलन एवं युग प्रतिक्रमण की प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित किया। प्रथम यति सम्मेलन जयपुर में एवं द्वितीय सम्मेलन कारगुवां जी में सम्पन्न हुआ। आपके नेतृत्व में तृतीय यति सम्मेलन आपके जन्मस्थान पथरिया मध्यप्रदेश में नवनिर्मित विरागोदय तीर्थ पर अपने सभी शिष्यों के साथ संपन्न हुआ। आचार्य श्री विरागसागर जी ने डेढ़ सौ के लगभग समाधि सल्लेखना कराईं। आचार्य श्री की करुणा और वात्सल्य ऐसा रहा कि उन्होंने युवाओं एवं वृद्धजनों को भी दीक्षा देकर उन्हें मोक्ष मार्ग का पथिक बनाया।

हम भिलाई वासी आचार्य श्री के सदैव ऋणी रहेंगे, सन् 2003 में आचार्य श्री का

चातुर्मास भिलाई में सम्पन्न हुआ। उनकी पावन प्रेरणा से भिलाई में रिसाली क्षेत्र में जैन मंदिर बनाने की योजना बनी। उनके निर्देशन एवं प्रेरणा से सन् 2005 में भिलाई जैन समाज के सहयोग से 1008 श्री मल्लिनाथ दिगंबर जैन मंदिर रिसाली में बन गया। आचार्य श्री विरागसागरजी का यह उपकार रिसाली समाज हमेशा स्मरण रखेगी।

आचार्य श्री विरागसागर जी ने स्वास्थ्य खराब होने पर अपने संघ को व्यवस्थित करते हुये चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी को अपने संघ का प्रथम पट्टाचार्य नियुक्त करते हुये कहा कि श्री विशुद्ध सागर जी यह दायित्व निभाने में सक्षम हैं। उन्होंने सभी से क्षमा माँगी और सबको क्षमा कर, समाधि सल्लेखना पूर्वक अपनी यात्रा को विराम दिया। उनके जाने के बाद उनके कार्य और उनके उपदेश हम सबका सदा ही मार्गदर्शन करते रहेंगे। मैंने आचार्य श्री के कई बार दर्शन किये प्रवचन सुने और उन्हें आहार देने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। मेरी यही भावना है कि मैं व्रत संयम धारण कर समाधि मरण करूँ इसी भावना के साथ परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागरजी के चरणों में शत् शत् नमन।

कविता

रिमझिम रिमझिम पानी आया

नव्या मोदी, प्रस्टिज पब्लिक स्कूल, इंदौर

छपक थपक बच्चों मन भाया,
रिमझिम रिमझिम पानी आया,
भीनी, सोंधी, खुशबू लाया
तरह तरह के आमों की सौगात,
लो शुरु हो गई बरसात॥
डबरा, डबरी, ताल, तलैया,
नाच रहे सब ता, था, थैया
टर्र, टर्र, मेंढक जी बोले
करें रात भर खुरापात
लो शुरु हो गई बरसात॥
धान खेत, धरती लहराई,
रंग बिरंगे फूल खिल उठे
भोरों ने ली फिर अंगडाई
उमड़ घुमड़ बदरों ने दी फिर
इन्द्र धनुष सतरंगी सौगात
लो फिर शुरु हो गई बरसात॥

सम्यग्दृष्टि के आस्रव-बन्ध तथा निर्जरा

(आचार्य कुन्दकुन्द वाङ्मय के सन्दर्भ में)

❊ डॉ. शैलेष कुमार जैन, सांगानेर-जयपुर ❊

सात तत्वों में आस्रव व बन्ध को समान्यतः हेय माना गया है। चतुर्थ गुणस्थान से सिद्ध दशा तक सभी सम्यग्दृष्टि हैं। सिद्धों के भी क्षायिक सम्यक्त्व होता है। ऐसी स्थिति में सम्यग्दृष्टि के निर्देश मात्र से विभिन्न गुणस्थानों में स्थित सभी सम्यग्दृष्टियों के आस्रव-बंध की स्थिति एक समान नहीं मानी जा सकती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने जीवादि तत्त्वों के श्रद्धानी को भी सम्यग्दृष्टि कहा है और निष्कषाय जीवों को भी सम्यग्दृष्टि कहा है।

आचार्य कुन्दकुन्द समयसार के आस्रव अधिकार में सम्यग्दृष्टि के आस्रव का निरोध होने का वर्णन करते हुये लिखते हैं :-

णत्थि दु आसवबंधो सम्मादिट्ठस्स आसवणिरोहो।
संते पुव्वणिबद्धे जाणदि सो ते अबंधंतो ॥[1]

सम्यग्दृष्टि जीव के आस्रव बन्ध नहीं है किन्तु आस्रव का निरोध है वह सत्ता में स्थित पहले के बंधे हुये कर्मों को केवल जानता है, नवीन बन्ध नहीं करता है।

उक्त गाथा में सम्यग्दृष्टि के आस्रव का निरोध कहा गया है और ऐसी ही कुछ गाथाओं के आधार पर समाज में अविरत सम्यग्दृष्टि के भी आस्रव का निरोध मान लिया गया है। जैनसिद्धान्त में मात्र शब्दार्थ से अर्थ ग्रहण स्वीकार्य नहीं है बल्कि शब्दार्थ, नयार्थ, मतार्थ, आगमार्थ और भावार्थ पूर्वक प्राप्त निष्कर्ष ही मान्य है। ऐसी स्थिति में यहाँ पर भी हमें आगम के परिप्रेक्ष्य में विचार करना पड़ेगा। आगम का स्पष्ट सिद्धान्त है चतुर्थ गुणस्थान में एक समय के लिये भी **बंध का आस्रव** का अभाव नहीं है।

आचार्य कुन्दकुन्द के सर्म्पूण साहित्य में कहीं भी अविरत सम्यग्दृष्टि को आस्रव-बंध रहित नहीं बताया है। रही बात सम्यग्दृष्टि के आस्रव-बंध से रहित होने की तो यहाँ वीतराग सम्यग्दृष्टि मुनि ही हैं, जो कि उनकी अनेक गाथाओं से सुस्पष्ट ही है।

जो लोग चतुर्थ गुणस्थान में आस्रव का अभाव मानते हैं वे आस्रव-बंध व निर्जरा एक साथ स्वीकार नहीं करते और आगम चतुर्थ गुणस्थान को आस्रव-बंधहीन निरूपित नहीं करता है।

यदि समयसार के आस्रव अधिकार की ही बात करें तो आचार्य कुन्दकुन्द ने स्वयं अधिकार के प्रारंभ में ही मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग को आस्रव के कारण लिखे हैं। तत्त्वार्थसूत्रादि में भी बंध के ये प्रत्यय वर्णित हैं।[2]

तत्त्व निर्णय के लिये निर्देश मात्र से निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है, इसीलिये आचार्य उमास्वामी महाराज ने लिखा- निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः यानि निर्देश के बाद स्वामित्व आदि पर भी विचार करना होगा तभी सत्य का निर्णय हो सकता है। यहाँ पर भी आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा सम्यग्दृष्टि के आस्रव-बंधादि के अभाव के निर्देशात्मक कथन के साथ हमें उसके स्वामित्व का निर्णय करना अनिवार्य है। कारण- सम्यग्दृष्टि जीव अनेक प्रकार के हैं , विभिन्न गुणस्थानों में है।

आचार्य कुन्दकुन्द के अनुसार सम्यग्दृष्टि कौन है ? यदि इस बात का विचार कर लिया जाये तो

इस प्रकार की भ्रान्तियाँ रह नहीं सकती है। वे सम्यग्दृष्टि का स्वरूप लिखते हैं-

परमाणुमित्तियं पि हु य रागादीणं तु विज्जदे जस्स।
णवि सो जाणदि अप्पाणयं तु सव्वागम धरोवि ॥
अप्पाणमयणंतो अणप्पयं चावि सो अयाणंतो।
कह होदि सम्मदिट्ठी जीवा जीवे अयाणंतो ॥[3]

अर्थात् जिसके राग का लेशमात्र भी विद्यमान है, तो वह जीव सम्पूर्ण द्वादशांग शास्त्र का पारंगत होकर भी आत्मा को नहीं जान सकता है जब आत्मा को नहीं जान सकता है तो वह अन्य को भी नहीं जान सकता एवं जो आत्मा और पर को नहीं जान सकता, वह जीव और अजीव दोनों को भी नहीं जानने वाला सम्यग्दृष्टि कैसे हो सकता है ?

यहाँ आचार्य देव ने कितने स्पष्ट शब्दों में सम्यग्दृष्टि का लक्षण निरूपित किया है। परमाणु मात्र राग निश्चित रूप से सूक्ष्म लोभ का वाचक है और सूक्ष्म लोभ दसवें गुणस्थान तक होता है। ऐसी स्थिति में आचार्य कुन्दकुन्द जिस सम्यग्दृष्टि को अबंधक और निर्जरारत कह रहे हैं वह नियम से वीतराग सम्यग्दृष्टि साधु ही हैं। तभी तो उन्होंने ऐसे सम्यग्दृष्टि के उपभोग को भी निर्जरा का कारण कहा है-

उवभोज्जमिंदियेहिं दव्वाणमचेदणाणमिदराणं।
जं कुणदि सम्मदिट्ठी तं सव्वं णिज्जरणिमित्तं ॥[4]

अर्थात् सम्यग्दृष्टि जीव अपनी इन्द्रियों के द्वारा जिन चेतन-अचेतन द्रव्यों को उपभोग करता है, वह सब उपभोग निर्जरा के लिये ही करता है। गाथा की टीका करते हुये श्री अमृतचन्द्रसूरि ने लिखा है- **विरागस्योगभोगो निर्जरायै एव।**[5] निश्चित रूप से विरागी साधु को ही कहा जा सकता है, अव्रती विरागी नहीं हो सकता है और विरागी अव्रती नहीं हो सकता है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने बड़े स्पष्ट शब्दों में अनेक गाथाओं में निर्जरा के स्वामी का वर्णन किया है तथा एक भी ऐसी गाथा नहीं है जिससे ये सिद्ध हो कि अव्रत सम्यग्दृष्टि के आस्रव-बंध का अभाव होता है या अव्रत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणी निर्जरा होती है। समयसार में वे कहते हैं-

मोत्तूण णिच्छयट्ठं ववहारेण विदुसा पवट्टंति।
परमट्ठमस्सिदाण दु जदीण कम्मखओं विहिओ ॥[6]

अर्थात् विद्वान् निश्चय नय के विषय को छोड़कर व्यवहारनय से प्रवृत्ति करते हैं परन्तु कर्मों का क्षय परमार्थ का आश्रय करने वाले यतीश्वरों के ही कहा गया है।

उक्त गाथा में आगत जदीण शब्द से सिद्ध है कि कर्मों का क्षय यतियों के ही होता है। प्रवचनसार में भी उन्होंने लिखा है-

अत्थेसु जो ण मुज्झदि ण हि रज्जदि णेव दोसमुपयादि।
समणो जदि सो णियदं खेवेदि कम्माणि विविधाणि ॥[7]

अर्थात् जो मुनि ब्राह्य पदार्थों में न मोह करता है, न राग करता है और न द्वेष करता है, वह निश्चित ही अनेक कर्मों का क्षय करता है। यहाँ स्पष्ट रूप से श्रमण यानि साधु को ही निर्जरा का अधिकारी बताया है। बारसाणुवेक्खा में तो आचार्य कुन्दकुन्द ने अविपाक निर्जरा का स्वामी व्रत

संयुक्त आत्मा के ही कहा है। देखिए-

सा पुण दुविहा णेया सकालपक्का तवेण कयमाणा।

चदुगदियाणं पढ़मा वयजुत्ताणं हवे विदिया ।।[8]

अर्थात् वह निर्जरा दो प्रकार की जननी चाहिये। एक अपना उदय काल आने पर कर्मों का स्वयं पककर झड़ जाना और दूसरी तप के द्वारा की जाने वाली। इनमें पहली निर्जरा तो चारों गति के जीवों के होती है और दूसरी व्रती जीवों के होती है।

आज मिथ्यात्व अकिंचित्कर को लेकर समाज में अनेक प्रकार के भ्रम उत्पन्न किये जाते हैं । तत्त्वार्थ सूत्र के बंध तत्त्वनिरूपक आठवें अध्याय के प्रथम सूत्र को प्रमाण रूप में प्रस्तुत करते हैं लेकिन वहाँ मात्र मिथ्यात्व को ही बंध का प्रत्यय नहीं बताया गया है बल्कि अविरति को भी बंध का प्रत्यय बताया गया है फिर अविरत सम्यग्दृष्टि के अबंधक अवस्था कैसे हो सकती है ?

दूसरी बात ये भी है कि आपके मत में आस्रव-बंध और निर्जरा एक साथ नहीं माने जाते हैं क्योंकि आप शुभोपयोग को मात्र बंध का ही कारण मानते हैं जबकि आगम में शुभोपयोग से बंध और निर्जरा दोनों का स्पष्ट विधान है। तथा हिंसादि पापों के त्याग के बिना व्रत नहीं माने गये हैं। व्रत के लक्षण में ही कहा है- **हिंसाऽनृतस्तेयाऽब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्।**[9]

शुभाशुभ कर्म किसके नहीं आते हैं ? ये भी आचार्य कुन्दकुन्द ने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा है आश्चर्य है कि इतनी स्पष्ट गाथा होने के बाद अव्रती के शुभाशुभ कर्मों का अभाव कैसे स्वीकार किया जा सकता है, वह भी आचार्य कुन्दकुन्द का गुणगान करते हुये। गाथा है-

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व सव्वदव्वेसु।

णासवदि सुहं असुहं समसुहदुक्खस्स भिक्खुस्स ।।[10]

अर्थात् जिसके सब द्रव्यों में न राग है, न द्वेष है, न मोह है, सुख-दुःख में मध्यस्थ रहने वाले उस भिक्षु के शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का आस्रव नहीं होता है।

अगली ही गाथा में पुनः लिखा है कि समस्त परद्रव्यों का त्याग करने वाले व्रती पुरुष के जब पुण्य और पाप दोनों प्रकार के योगों का अभाव हो जाता है तब उसके पुण्य और पाप योग के द्वारा होने वाले कर्मों का संवर हो जाता है।

जस्स जदा खलु पुण्णं जोगे पांव णत्थि विरदस्स।

संवरणं तस्स तदा सुहासुहकदस्स कम्मस्स ।।11

एदाणि णत्थि जेसिं अज्झवसाणाणि एवमादीणि।

ते असुहेण सुहेण व कम्मेण मुणी ण लिप्पंति ।।[12]

अर्थात् ये तथा इस प्रकार के अन्य अध्यवसान जिन मुनियों के नहीं हैं, वे मुनि अशुभ अथवा शुभ कर्म से लिप्त नहीं होते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द कितनी बड़ी बात लिखते हैं कि अव्रती के तो छोडिए, व्रती साधु के भी जब तक दर्शन-ज्ञान और चारित्र जघन्य भावों से परिणमन करते हैं तब तक वे साधु ज्ञानी भी कर्मों से बंधते रहते हैं। ऐसी स्थिति में अव्रती के तो अबंधक दशा की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

दंसणणाणचरित्तं जं परिणमदे जहण्णभावेण।

णाणी तेण दु बज्झदि पुग्गलकम्मेण विविहेण ।।[13]

अर्थात् जिस कारण से दर्शन, ज्ञान और चारित्र जघन्य भाव से परिणमन करते हैं उस कारण ज्ञानी अनेक प्रकार के पुद्गल कर्मों से बँधता है।

आचार्य अमृतचन्द्रसूरि के शब्द भी उक्त संबंध में गंभीरता पूर्वक ध्यान देने योग्य हैंः-

ज्ञानगुणस्य हि यावज्जघन्यो भावो तावत् तस्यान्तमुहूर्त विपरिणामित्वात् पुनः पुनरन्यतयास्ति परिणामः । स तु यथाख्यातचारित्रावस्थाया अधस्तादवश्यंभाविराग-सद्भावात् बन्धहेतुरेव स्यात्। अर्थात् यथाख्यात चारित्र के पहले अनिवार्य रूप से राग पाया जाता है और राग के सद्भाव में बंध होता ही होता है।

प्रवनसार में आचार्य देव ने साफ-साफ शब्दों में व्यक्त किया है शुद्धोपयोगी मुनि आस्रव से रहित होते हैं तथा शुद्धोपयोग रहित कर्मबंध करने वाले।

समणा सुद्धवजुत्ता सुहोवजुत्ता य होंति समयम्हि।

तेसु वि सुद्धवजुत्ता अणासवा सासवा सेसा ।।[14]

अर्थात् मुनि परगागम में शुद्धोपयोगी और शुभोपयोगी के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं । उनमें से शुद्धयोपयोगी आस्रव से रहित है और शेष आस्रव से सहित हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र के नाम पर अध्यात्म के उत्कर्ष को अव्रत सम्यग्दृष्टि में बड़े धडल्ले से घोषित किया जाता है लेकिन वास्तविकता देखिए, वे लिखते हैं-

कर्तारं स्वफलेन यत्किल बलात्कर्मैव ना योजयेत्।

कुर्वाणः फललिप्सुरेव हिं फलं प्राप्नोति यत्कर्मणः।

ज्ञानं संस्तदपास्तरागरचनो नो बध्यते कर्मणा।

कुर्वाणोऽपि हि कर्म तत्फलपरित्यागैकशीलो मुनिः ।।[15]

अर्थात् कर्म ही उसके कर्ता को अपने फल के साथ बलात् नहीं जोड़ता, फल की इच्छा वाला ही कर्म को पाता है इसलिये ज्ञानरूप रहता हुआ और जिसे कर्म के प्रति राग की रचना दूर की है, ऐसा मुनि कर्मफल के परित्यागरूप ही एक स्वभाव वाला होने से कर्म करता हुआ भी कर्म से नहीं बंधता है।

और भी देखिए- **येषामेवैतानि न विद्यते त एव मुनिकुंजराः केचन सदहेतुकज्ञप्तेकक्रियं, सदहेतुकज्ञायकैकभावं, सदहेतुज्ञानैकरूपं च विविक्तमात्मानं जानंतः, सम्यक्पश्यंतोऽनु-चरंतश्च, स्वच्छंदोद्यमंदांतज्योतिषोऽत्यंतमज्ञानादिरूपत्वाभावात्, शुभेनाशुभेन वा कर्मणा न खलु लिप्येरन्।**[16]

अर्थात् मात्र जिनके यह अध्यवसाय नहीं हैं, वे ही कोई विरले मुनिकुञ्जर सद्रूप अहेतुम ज्ञप्ति ही जिसकी एक क्रिया है, स्द्रूप ज्ञायक ही जिसके एक भाव है और सद्रूप अहेतुक ज्ञान ही जिसका एक रूप है, ऐसे भिन्न आत्मा को जानते हुये सम्यक् प्रकार से देखते हुये और आचरण करते हुये, स्वच्छ और स्वच्छन्दतया उदयमान ऐसी अमंद अन्तर्ज्योति अज्ञानदिरूपता का अत्यंत अभाव होने से शुभ या अशुभ कर्म से वास्तव में लिप्त नहीं होते हैं।

आचार्य नेमिचंद्र जी ने भी कितना स्पष्ट सूत्र दिया है- **जोगा पयडिपदेसा ठिदि अणुभागा कसायदपो होंति ।**[17] जब अविरति और कषाय के सद्भाव में बंध नियामक है तब चतुर्थ गुणस्थानवर्ती को अबंधक मानना विपरीत श्रद्धा तो है ही, आगम का अवर्णवाद भी है।

जुकाम, सर्दी का घरेलू इलाज

बदलते मौसस में सर्दी से बचाव की पूर्ण सावधानी रखनी चाहिये। गरम कपड़े पहने रहना चाहिये बदलते मौसम में जुकाम-खाँसी, एलर्जी और सांस रोग हो जाते हैं। सर्दी की लापरवाही से जुकाम हो जाता है और कफ बनकर साँस के रोग हो जाते हैं। शारीरिक रूप से कमजोर लोगों को सर्दी होती है।

जुकाम के कारण: 1. पूर्व संचित दोष- सांस, कब्ज, टान्सिल बढ़ना, नासा रोग, दुर्बलजा, शीत प्रकृती।

2. तात्कालिक उत्तेजक प्रभाव-वर्षा में भीगना, ठण्ड लगना, कड़ी धूप में धूमना और तुरंत पानी पसीना, रात्री जागरण, अपच, एकाएक पसीना बन्द करना, स्वच्छ वायु अभाव, अति स्त्री सहवास, गर्म पानी से स्नान, सर्दी के प्रतिक भय, शीतल पदार्थों का सेवन।

उपाय -1. सर्दी जुकाम में दूध, दही नहीं लेना चाहिये।

2. पानी- जुकाम आदि तात्कालिक कारणों से हो तो गरम जल पीयें और भोजन न करें।

3. गुड- सर्द ऋतु में गुड और काले तिले के लड्डू खाने से जुकाम, खांसी आदि रोग नहीं होते हैं।

सेव- दुर्बल मस्तिष्क के कारण भी सर्दी होती है। तब दवायें ज्यादा काम नहीं आती हैं। तो भोजन से पहले छिलके सहित सेव खायें।

4. आंवला- जिन्हें प्रायः जुकाम रहता है, उन्हें आंवले का अधिक प्रयोग करना चाहिये।

5. चाय- जुकाम आदि ठंड से हो, छिंके, आँख, नाक से पानी निकलता हो तो चाय पीना लाभयदायक है।

जो जीवों के हित में कहा जाये वह सत्य धर्म है

✻ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन (मनुज), इंदौर ✻

सत्य धर्म केवल सत्य - सत्य बोलना ही नहीं है किन्तु जो जीवों के हित में, उसकी सुरक्षा में कहा जाये वह भी सत्य है। जीव रक्षा में भले ही कुछ झूठ बोलना पड़े तो भी सत्य अणुव्रत में दोष नहीं कहा है। 'सत्यंब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।' सत्य बोलना चाहिये, प्रिय भी बोलना चाहिये, ऐसा सत्य भी न बोलें जो अप्रिय हो, जिससे किसी प्राणी की हिंसा हो रहीं हो उसकी जान जा रही हो।

कथानक है- एक राजकुमार को ज्ञात था कि अमुक संत मन की बात जान लेते हैं। वह उन्हें झूठा साबित करने के लिये एक चिड़िया लेकर भरी सभा में उनके सामने गया। पूछता है यह चिडिया जीवित है या मृत ? वह जीवित चिड़िया के गले पर हाथ का अंगूठा लगाये था। सोच कर गया था यदि उन्होंने बोला जीवित है तो अंगूठा से गला दबाकर मार देगा और संत को झूठा सावित कर देगा। और मृत बोला तो जीवित तो है ही। सन्त सारी बात समझ गये। उन्होंने राजकुमार के प्रश्न के उत्तर में कहा- तुम यह मृत चिड़िया हाथ में लिये हुये हो। राजकुमार ने तुरंत मुट्ठी खोलकर चिडिया उड़ा दी और कहा इन संत को कुछ ज्ञात नहीं हो पाता ये झूठे हैं, देखो थोड़ी सी बात भी नहीं बता सके, इनके विषय में व्यर्थ कहा जाता है कि ये मन की बात जान कर सच बता देते हैं। संत ने कहा- राजकुमार मैं तुम्हारे मन की सारी बात जान गया था, यदि मैं उसे जीवित बता देता तो तुम उसे मार देते। मेरे एक झूठे से यदि उस जीव की जान की रक्षा हो गई तो यह झूठ भी सत्य की श्रेणी में आता है। इसीलिये कहा कि है कि सत्य बोलें किन्तु प्रिय बोलें।

इसी तरह का एक और प्रसिद्ध उदाहरण आचार्य सुनीलसागर जी ने लिखा है। एक सन्यासी मार्ग पर पेड़ के नीचे बैठे ध्यान कर रहे हैं। वहाँ से एक हिरण भागता हुआ गया, कुछ ही देर में पीछे से शिकारी भागते हुये आ रहे हैं। बाबाजी सारा मामला समझ गये। रास्ते में कोई और दिखाई नहीं दे रहा, वह शिकारी सीधे बाबा के पास रूका व पूछा- कोई हिरण यहाँ से गया है क्या ? किस दिशा में गया, आप बताओ। अब सन्यासी के लिये बड़ा धर्म संकट। सच बोल दें, कि हां, हिरण यहाँ से गया है, तो निश्चित रूप से ये शिकारी उसे मार डालेंगे, प्राणों का घात हो जायेगा। ऐसी विपदा में अब झूठ भी बोले तो व्रतों में दोष लगे, नियम टूट जाएँ। जहाँ अहिंसा की भावना हो, प्रशस्त मन हो, तो विवेक से रास्ता खोज निकालते हैं। बाबाजी वहां से खडे हो गये, अब मौन रहते हैं, तो खुद की जान का भी खतरा था, शिकारी पीछे-पीछे जाये तो हिरण के लिये जानलेवा हो जाय। तब खड़े होकर सन्यासी बोले 'देखो भाई साहब- जब से मैं खड़ा हूँ तब से यहाँ से कोई भी नहीं गया।' सच

भी हो गया जान भी बच गई, समझे कुछ ? हिरण तो जब वह बैठे थे तब वहां से गया था, पर यह नहीं कहना है। खड़े हैं, फिर तो कोई नहीं गया, सच बात है। शिकारी ने बात मान ली, ज्यादा दिमाग नहीं लगाया व वापिस लौट गये। यह है सच्ची धर्मनिष्ठता।

सत्यवादी यदि ये पांच कार्य- परिवाद, रहोभ्याख्यान, पैशून्य, कूटलेखकरण और न्यासापहरण करता है तो उसके सत्य व्रत में दोष लगता है ये अतिचार कहलाते हैं। चारों ओर से दोषों का उल्लेख करना 'परिवाद' है। सबसे सस्ता काम यदि कुछ है तो किसी की बुराई करना। आज कल बहुत बढ़ गया है सच्ची बात को झुठलाना। प्रायः व्यक्ति दिन राज दूसरों का लेखा-जोखा करता है। फलाना ऐसा है, ढिकाना ऐसा है। जिसकी बुराई कर रहे हैं उसका बुरा हो या न हो, तुम पक्के नीच गोत्र के पात्र बन रहे हो। दूसरों की बुराई में आपका परिवाद है, उसका त्याग करें।

कहा है-

करो भलाई पर की, भला स्वयं का होगा।
करो बुराई पर की, बुरा स्वयं का होगा।

विज्ञान भी स्वीकार करता है, जब हम दूसरों की बुराई करते हैं, हमारे कलुषित परिणामों के द्वारा जो आभामण्डल का निर्माण होता है, वह काला व टूटा रहता है। शरीर में भी घातक रसायन होते हैं, मतलब पर निंदा, झूठा उपदेश देना तन, मन, जीवन की बर्बादी है।

किसी की गोपनीय बातें किसी अन्य को बता देना 'रहोभ्याख्यान' है। आपको किसी तरह कोई बात चाहे व्यापार की हो, घर-परिवार की हो, कुछ भी पता चला तो दूसरों को न बताएं वरना आप का व्रत टूटेगा, सामने वाले का मन खराब होगा, हो सकता है रिश्ते भी टूट जाएं। इसलिये कहाँ कैसे सावधानी रखना चाहिये यह कहा गया है। पैशून्य का मतलब चुगली करना। चुगली करने से दूसरों का अपकार होता है, कलह होता है और हमारे सत्य व्रत में दोष लगता है।

झूठे दस्तावेज बनाना, झूठे हस्ताक्षर करना, पुरानी लिखावट में नई मिला देना अथवा उनमें काट छाँट कर देना आदि 'कूटलेखकरण क्रिया' है। पहले के समय में कुछ बेइमान महाजन चाँदी आदि धन रखकर दूसरों को पैसा देते थे। कुछ समय बाद वह लेने आये तो बहाने बनाकर चीज हड़प लेते थे। विश्वास तोड़कर किसी की चीज ले लेना। कहकर बात मुकर जाना 'न्यासापहारिता' है।

घर गृहस्थी में रहते हुये इन सब दोषों की संभावना रहती है, इसलिये इन दोषों से बचने के लिये प्रयत्न शील रहना चाहिये। सत्य व्रत का पालन करने वाले को इन सबसे भी दोष लगता है। हमें सत्य नहीं छोड़ना चाहिये, अन्त में सत्य की ही विजय होती है।

आचार्य नेमिचन्द्र और ज्योतिष शास्त्र

❊ लेखक- श्रीयुत पं. नेमिचन्द्र जैन, न्याय-ज्योतिष-तीर्थ ❊

कविता

सम्यक् शीतलता लाते

तुम नवीन से बन प्रमाण सागर हो जग में लहराते
जिनवाणी की बात सुनाते सम्यक् शीतलता लाते
अनुभव की बातें बतलाते शंका के समाधान में
विद्यासागर चेतन लहरें उछलें सागर प्रमाण में
मुनि प्रमाण सागर चरणों में, कोटि कोटि वन्दन मेरा
मुनि वचनों को हृदयधरो रे मिट जाये भव का फेरा
अब तो समय गुजारों भैया, गुरुवर के गुणगान में
तुम संतान सुरेन्द्र निराले सोहनी माँ के लाल हो
जिनवाणी के मुख्य प्रवक्ता मिथ्यामत को काल हो
अपनी उमर लगा दी सारी अर्जित करने ज्ञान में
जन्म हजारीबाग में लेकर, भारतभर में धूम चुके
आपकी प्रतिभा सम्मुख सारे नमन करें विद्वान झुके
वाणी है गंभीर आपकी जिन आगम श्रद्धान में

मांसाहार, शाकाहारी समाज के साथ धोखा

❊ विजय कुमार जैन राघौगढ़ (म.प्र.)❊

देश में भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा खाद्य उत्पादों, बिस्किट, चॉकलेट आदि में मांसाहार मिश्रण कर उपभोक्ताओं को धोखा दिया जा रहा है। लेज में सूअर की चर्बी के बाद बड़ा खुलासा हुआ है। कंपनियों द्वारा सरकार से मिलकर जो खाद्य उत्पाद बाजार में बेच रहे हैं उनमें मांसाहार मिश्रण किया जा रहा है। कंपनियों द्वारा उत्पादन में मांसाहार का वितरण (ई) कोड के नाम पर किया जा रहा है। शाकाहारी एवं मांसाहारी खाद्य पदार्थों को हरे एंव लाल रंग में वर्गीकृत करने के खेल में देश में कम्पनियों द्वारा समाज के साथ जबरदस्त धोखा किया जा रहा है, और इसमें सरकार भी शामिल है।

मांसाहारी पदार्थों के मिश्रण और प्रोडक्ट सोर्स (ई) कोर्ड के अंकित करने के खेल से आम नागरिक एवं समाज अनजान है। इस मामले में खोज खबर ली गई तो सारा माजरा सामने आ गया। हर घर में पाये जाने वाले पारले, सनफीस्ट, कैडबरी, नेस्ले, ब्रिटानिया, आई.टी.सी, प्रिया गोल्ड, रिंगली न्यू टोन, कैंडीमैन जैसी दर्जनों कम्पनियों के उत्पादन में मांसाहार का मिश्रण है। उल्लेखनीय की कुछ दिन पूर्व लेज कुरकुरे जैसे खाद्य पदार्थों में मांसाहार मिश्रण होने की खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी।

इसके बाद भी धार्मिकता की हित संरक्षक समझी जाने वाली भाजपा सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। पर इस खबर के बाद जागरूक नागरिकों धर्म गुरुओं और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं ने जरूर अपने-अपने प्रयास प्रारंभ किये हैं। लाल-हरे रंग के चिन्ह के नाम पर धोखा दिया जा रहा है दुनिया में यूरोपियन देशों में खाद्य पदार्थों के लिये बनाये गये कड़े कानून के बावजूद भारत में सन् 1993 में इस विषय में प्रयास शुरु हुये और मांसाहार के लिये लाल एवं शाकाहार के लिये हरे चिन्ह अंकित करने का नियम बनाया गया।

सरकारी अधिसूचना के अंतर्गत पशु पक्षियों के बाल, नाखून, पंख, चर्बी और अंडे की जर्दी को मांसाहार की श्रेणी से बाहर रखा गया है। जिसके चलते विभिन्न देशी विदेश कंपनियां अपने मांसाहारी खाद्य उत्पादकों पर हरा चिन्ह लगाकर शाकाहारी पदार्थों के रूप में बेच रहे हैं। जबकि असलियत कुछ और ही है, इन पदार्थों में मांसाहार भी मिश्रित है। भारत सरकार ने इन कंपनियों की धोखा धड़ी को नजर अंदाज कर इन पदार्थों में मिश्रित मांसाहार अवयवों को सीधे लाल चिन्ह न लगाकर (ई) कोड में लिखने के नियम बना दिये। इसके चलते आम उपभोक्ता अनजाने मे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक तत्त्व का सेवन कर रहे हैं। विचारणीय विषय यह है कि इस अज्ञानता के चलते हमारी धार्मिक भावनायें भी आहत हो रही है। हमने यह भी जानने का प्रयास किया है ही नंबर कोड का क्या है, मांसाहारी पदार्थों के मिश्रण को (ई) कोड नंबर में लेकर जाने के नियम क्यों और किसके के लिये बनाये गये हैं। यह ज्यादा शोध का विषय नहीं है। क्योंकि कोई भी अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकता है कि यह सारी प्रक्रिया उत्पादकों को लाभ पहुंचाने के लिये सरकार द्वारा अपनायी है।

वहीं जहां पर कोड की पहचान की बात है। तो अच्छा खासा पढ़ा लिखा नागरिक भी आसानी से उत्पाद कोड को नहीं समझ सकता। जीव हत्या पर प्रार्थना स्रोत को ई.47102 और संभावित

जीव हत्या कर प्राप्त मांस स्रोत को ई 471, ई 322, ई 102 और संभावित जीव हत्या कर प्राप्त मांस को ई. 472, ई. 322, ई 481, ई 270, ई 322, ई 222 नंबर दिये गये हैं इसके अलावा बच्चों के लिये हानिकारक स्रोत के लिये ई. 296, ई 110, ई 102, ई 133 नंबर दिये गये हैं पारले कंपनी के उत्पाद क्रेक जैक, पारले-जी, मोनाको, ओरेंज क्रीम, बिस्किट, बटरकप, ट्रॉफी, बच्चा मैंगो बाइट, किस्मी बार, बटर कप, फाइव स्टार, डेरी मिल्क, बॉर्नविटा, मिल्क पाउडर, इकलेयर चॉकलेट, मिल्क ट्रीट, जेम्स, लेस्ले की मिल्क चॉकलेट, मैगी, टोमेटो सॉस, नेस्ले बोरबन बिस्किट, ब्रिटानिया कंपनी के उत्पाद ब्रिटानिया 50-50, जिगजाग, गुड्डे और नाइस टाइम बिस्किट, प्रिया गोल्ड क्लासिक क्रीम, स्नीकाई सीएनसी कोकोनट बिस्किट, रिंगली के सेंटर फ्रेश, न्यू ट्रीन महालेक्टो, जेम्स और कैंडीमैन, मिंटो पेरीज बिगो, केपी फूड परपेटी के विभिन्न उत्पादों में कोड डाला है।

भारत में खाद्य उत्पादकों कम्पनियों द्वारा शाकाहारी समाज को मांसाहारी उत्पाद धोखाधडी से बेचने के षडयंत्र में धार्मिक संतों एवं बुद्धि जीवी जनों ने अपने स्तर पर प्रयास किये हैं। समाधिस्थ जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज ने जागरूकता के अनेक अभियान चलायें वर्तमान में उनके शिष्य मुनिराजों एवं आर्यिकाओं द्वारा यह अभियान चलाया जा रहा है। गत दो वर्ष पूर्व राघौगढ़ नगर में आर्यिका निष्काम मती, विरतमती एवं तथामती का वर्षायोग चातुर्मास हुआ। आर्यिका संघ ने लगातार चार माह तक जागरूकता अभियान चलाकर 5 वर्ष से 20 वर्ष तक के युवकों को आजीवन फास्ट फूड, मैंडी, बर्गर, चाउमिन, पिज्जा सहित इन कंपनियों के उत्पाद बिस्किट, चाकलेट आदि के त्याग की प्रतिज्ञा दिलायी। विचारणीय विषय यह है कि एक सौ चालीस करोड़ की जनसंख्या वाले देश में सौ, पांच सौ या एक हजार को प्रतिज्ञा दिलाने में सुधार नहीं लाया जा सकता।

जब तक केन्द्र सरकार इस धोखाधड़ी को रोकने कोई कठोर कदम नहीं उठायेगी।

कविता

सच्चा धर्म क्षमा

संस्कार फीचर्स

बदले की दुर्भावना से हम सदा ही मुक्त हो
बैर छोडें विरोध छोडें क्षमा वृष से युक्त हो
किये पूरब कर्म खोटे उनके क्यों हम भूल जाते
पुण्य से कुछ स्वर्ण पाते पाप कुछ धूल चाँटे
दोष औरों को नहीं दी निजकर्म से प्रबुद्ध हो
क्षमा तो पुरुषार्थ है अरू वीर भूषण है सदा
क्षमा को जो भूल जाते मुक्ति नहीं पाते कदा
क्षमा धारण करने वाला सदा मन से शुद्ध हो
शक्तिशाली बड़े जन ही क्षमा को नित धारते
कमजोर नर का साथ देते उन पर सब कुछ वारते
क्षमा ही है धर्म सच्चा क्षमा से नर शुद्ध हो

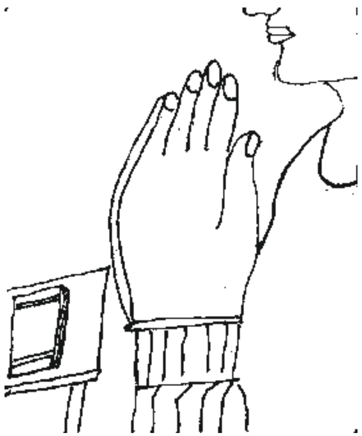

चलो देखें यात्रा

जयपुर का तीर्थ संघी जी मंदिर, सांगानेर

नाम एवं पता: श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, संघी जी सांगानेर जिला जयपुर 302029 फोनः 0141-2730390

सुविधायें: सुविधायुक्त एसी-13, कुलर अटैच-10, सामान्य 10 कमरे हैं। 12 फ्लेट्स का वानप्रस्थ आश्रम बन चुका है। भोजनशाला नियमित सशुल्क है।

मार्गदर्शन: स्टेशन सांगानेर एवं जयपुर है। जयपुर स्टेशन-15 किमी. तथा सांगानेर 5 किमी. है। जयपुर का हवाई अड्डा यहा से 2.5 किमी है। अजमेरी गेट से लो फ्लोअर बस मंदिर सर्किल तक पहुंचती है।

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर 8 मंदिर है। यहां आदिनाथ भगवान मंदिर प्राचीन भव्य एवं कलात्मक मंदिर है। भूगर्भ प्रतिमायें दर्शनों के बाद यथास्थान रख दी गई हैं। लाखों लोगों ने दर्शन का लाभ लिया था। क्षेत्र द्वारा ऋषभ देवग्रंथमाला मे विपुल साहित्य उपलब्ध है।

समीपवर्ती स्थल: रेवासा- श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रेवासा तह. दाँतारामगढ 332403 क्षेत्र जयपुर सीकर रोड पर गोरिया मोड से 4 किमी. ग्राम रेवासा में स्थित है। सन् 2001 में मुनि श्री सुधासागर महाराज के सान्निध्य में 7 फीट की सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ प्रतिमा शांतीनाथ की 7 फीट प्रतिमा तथा चौबीसी स्थापित की गई है। सम्पर्क 01572-22215

सुविधायें: मूल मंदिर में अटैच 6 कमरे, नसिया-नवीन धर्मशाला में 12 कमरे, भोजनशाला नियमित सशुल्क हैं।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि नि:शुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

आगम दर्शन

जीव ओर गति

गतीमार्गणा- ओध प्ररूपणा के पश्चात् आदेश प्ररूपणा को प्रारंभ करते हुये चौदह मार्गणाओं में प्रथम गति मार्गणा का आश्रय लेकर उसके ये पाँच भेद निर्दिष्ट किये गये हैं- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति और सिद्धगति। इनमें से नारकियों के मिथ्यादृष्टि, आदि चार तिर्यंचों के मिथ्यादृष्टि आदि पाँच, मनुष्यों के मिथ्यादृष्टि आदि चौदहों और देवों के मिथ्यादृष्टि आदि चार गुणस्थानों के अस्तित्व को प्रकट किया गया है।

इस प्रसंग में आगे कुछ विशेषता प्रकट करते हुये एकेन्द्रियों से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यन्त तिर्यचों को शुद्ध तिर्यच और संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयम पर्यन्त मिश्र कहा गया है। इसका अभिप्राय यह है कि एकेन्द्रियादि असंज्ञी पर्यन्त सब जीव एकमात्र तिर्यंचगति में होते हैं, इसलिये उन्हें शुद्ध तिर्यंच कहा गया है। पर आगे के वे संज्ञी पंचेन्द्रियादि संयता-संयत पर्यन्त प्रथम चार गुणस्थानों की अपेक्षा शेष तीन गतियों के जीवों से तथा संयतासंयम गुणस्थानवर्ती वे इस गुणसथान की अपेक्षा मनुष्यों से समानता रखते हैं, इसलिये उन्हें मिश्र कहा गया है। यही अभिप्राय आगे मिश्र और शुद्ध मनुष्यों के कहने में भी समझना चाहिये।

इन्द्रिय- दूसरी इन्द्रिय मार्गणा के प्रसंग में प्रथमतः एकेन्द्रिय, द्विइन्द्रिय, त्रिइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय (इन्द्रियातीत सिद्ध) इन इन्द्रियों की अपेक्षा पांच जीव भेदों का उल्लेख करके तत्पश्चात् पंचेन्द्रिय पर्यन्त उन एकेन्द्रियादि जीवों के यथाक्रम से भेद प्रभेदों का निर्देश किया गया है (33-35) आगे उनमें सम्भव गुणस्थानों का उल्लेख करते हुये एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पर्यंत सबके एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान के अस्तित्व को प्रकट किया गया है। आगे के सूत्र में असंज्ञी पंचेन्द्रिय से लेकर अयोग केवली पर्यंत सब ही जीव पंचेन्द्रिय होते है, यह कहा गया है जिसका अभिप्राय यह है की संज्ञी पंचेन्द्रियों में चौदहों गुणस्थान सम्भव हैं। तत्पश्चात वहाँ यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि एकेन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय जीवों से परे सब जीव अतिन्द्रिय- एकेन्द्रियादि जाती भेद से रहित कर्म कलंकातीत होते हैं।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अगस्त 2024

ये तीर्थ निराला

प्रथम-

प्राचीन शिरपुर का नजारा
अतिशय मय है तीरथ प्यारा॥
अंतरीक्ष प्रभु रंग है काला।
सुंदर है ये तीर्थ निराला॥

श्रीमती अंजु जैन घुवारा

द्वितीय-

ठौर ठौर पर चिह्न दिगम्बर।
प्रंदरह वेदी पूर्ण दिगम्बर॥
पार्श्वनाथ है मूल दिगम्बर।
झूठा दावा करें श्वेताम्बर॥
प्रभू पारस का पत्थर काला।
अरे दिगम्बर ये तीर्थ निराला॥

अतिशय जैन रहली

तृतीय-

संकट हर प्रभु शिरपुर राजे
अंतरीक्ष प्रभू पार्श्व विराजे
प्राचीन शुभ अतिशय वाला
भारत का ये तीर्थ निराला

राजकुमार जैन, इन्दौर

वर्ग पहेली क्र. 297
जुलाई 2024 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्रा जैन, भोपाल
द्वितीय : राजकुमारी जैन, सागर
तृतीय : अभिषेक जैन, मुंबई

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ द्ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

तप रक्षक क्षमा

भ्रमति ही स्वपतां भुवनं मनः

इन्द्र के स्थान के समान नेत्रों को हरण करने वाला यह स्थान भी तो अपूर्व ही दिखाई देता है। यहाँ दिखाई देने वाला यह सत्य है ? या असत्य है ? यथार्थ में सोने वालों का मन संसार में भ्रमण करता रहता है।

जनानां हि समस्तानां जीवानां नियतामुतिधां

उन्होंने कहा कि, हे साधो ! आपने चिरकाल से जिसकी अत्यधिक रक्षा की है तथा क्षमा ही जिसकी जड़ है ऐसा यह तप का भार क्रोधरूपी अग्नि से जल रहा है सो इसकी रक्षा की जाये, रक्षा की जाये।

मोक्षसाधनमण्येव तपो दुषयति क्षणात् ।
चतुर्वर्गरिपुः क्रोधः क्रोधः स्वपरनाशकः

यह क्रोध मोक्ष के साधनभूत तप को क्षण भर में दूषित कर देता है, यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों वर्गों का शत्रु हैं तथा निज और पर को नष्ट करने वाला है।

दुर्वाय हि भवितव्यता ।।

दिव्य अग्नि के द्वारा जब नगरी जल रही थी तब जान पड़ता था की देव लोग कहीं चले गये थे सो ठीक ही है क्योंकि भावतव्यता दुर्निवार है।

अगादे वाण्यनागादे मरणे समुपस्थिते ।
न मुहयन्ति जना जातु जिनशासनभाविताः ।।

जिनकी आत्मा धर्म ध्यान के वशीभूत थी-जो सम्यर्गदर्शन से शुद्ध थे, तथा जिन्होंने प्रायोपगमन नामक सन्यास धारण कर रखा था ऐसे बहुत से यादव और उनकी स्त्रियाँ यद्यपि अग्नि से जल रही थी तथापि भयंकर अग्नि केवल उनके शरीर को नष्ट करने वाली हुई, ध्यान को नष्ट करने वाली नहीं ।

केरियर

रोजगार हेतु कृषि कोर्स

भारत जैसे देश के लिये कृषि कार्य जीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा उपलब्ध कराता है। हमारे देश में 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या और अधिकतर ग्रामीण जनसंख्या खेती और का खेती से संबधित विविध कामकाज से अपनी आय कमाती है। कृषि और कृषि कार्य उनकी आय से प्राथमिक स्त्रोत है। दूसरी ओर हमारे देश की वृद्ध जनसंख्या के करोड़ों भूखों को भोजन प्रदान करने के लिये अत्याधिक कृषि उत्पादों की आवश्यकता है।

कृषि एक वृद्ध व विविधतापूर्ण उद्योग है, जिसमें बहुत से क्षेत्र शामिल है, जैसे कि औषधि उद्योग, कॉस्मेटिक, खत निर्माण इत्यादि।

भारत में कृषि मनुष्य की सबसे प्राचीन व सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि रही है। खेती में कई अन्य कार्य क्षेत्र भी शामिल रहे हैं। बुआई, फसल काटना तथा मार्केटिंग।

रोजगार हेतू कृषि कोर्स :- कुछ वर्षों पूर्व तक यह विश्वास व्यापक रूप से प्रचलित था कि कृषि और इससे संबंधित क्षेत्रों में कार्य करने के लिये किसी भी प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण कि आवश्यकता नहीं है। पर आधुनिक तरीके से खेती करने के लिये अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिये, खेती में विविध प्रयोग करके आय बढ़ाने के लिये आज औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है तथा इससे युवा पीढ़ी रोजगार भी प्राप्त कर सकती है।

बी.एस.सी, कृषि तथा एम.एस.सी. कृषि यह दो प्रशिक्षण कोर्स कृषि में उपलब्ध हैं।

प्रवेश परीक्षाः- उपरोक्त प्रशिक्षण कोर्स हेतू 10+2 विज्ञान विषयों सहित उत्तीर्ण होने के साथ एक सामान्य सी प्रवेश परीक्षा उत्तीण होना आवश्यक है। इस प्रवेश परीक्षा में जीव विज्ञान, वनस्पती विज्ञान, रसायन, भौतिक विज्ञान तथा गणित विषय के प्रश्नपत्र होते हैं। बी.एस.सी से चार वर्ष तथा एम.एस. सी दो वर्ष की अवधि में पूरी होती है।

रोजगार के अवसरः- इस प्रशिक्षण के बाद किसी भी राज्य अथवा केन्द्र सरकारी कृषि विभाग में कार्य करने की संधि उपलब्ध हो सकती है। और विविध प्राईवेट कंपनी में भी काम करने का मौका मिल सकता है। तथा खत और फर्टिलाईजर्स कि दुकान का लायसेंस भी मिलता है।

■ 1 अगस्त

- सुप्रीम कोर्ट ने एस.टी.एस. सी पर ओ.बी.सी से आरक्षण क्रीमलेचर लागू हो इस आशय का फैसला दिया।

- कोल्हापुर के स्वप्निल ने निशानेबाजी तीसरा कास्य पदक 2024 ओलंपिक में जीता।

- इलाहाबार हाइकोर्ट ने कृष्ण जन्म भूमि विवाद में मुस्लिम पक्ष की याचिका को खारिज किया अब हिन्दू पक्ष की 12 याचिकाओं की सुनवाई का मार्ग साफ हुआ।

■ 2 अगस्त

- भारत हॉकी में आस्ट्रेलिया से 3-2 से जीता।

- प्रसिद्ध चित्रकार सुधा मदन उपलकर का निधन हुआ वे 96 वर्ष की थी।

- मणिपुर में कुकी और मैतई के बीच शांति समझौता हुआ।

■ 3 अगस्त

- श्रीनगरः आतंकियों के लिये काम कर रहे 5 पुलिसकर्मी और एक शिक्षक बर्खास्त हुये।

- दलजीत सिंह चौधरी ने बी.एस.एफ का कार्य भार सम्हाला।

- म.प्र. को अंगदान प्रथा को बढ़ावा देने के लिये बेस्ट इमर्जिंग पुरुस्कार मिला।

■ 4 अगस्त

-

■ 5 अगस्त

-

■ 6 अगस्त

-

■ 7 अगस्त

-

■ 8 अगस्त

-

■ 9 अगस्त

-

■ 10 अगस्त

-

■ 11 अगस्त

-

■ 12 अगस्त

-

■ 13 अगस्त

-

■ 14 अगस्त

-

■ 15 अगस्त

-

■ 16 अगस्त

-

-

■ 17 अगस्त

-

■ 18 अगस्त

-

■ 19 अगस्त

-

■ 20 अगस्त

-

■ 21 अगस्त

-

■ 22 अगस्त

-

■ 23 अगस्त

-

■ 24 अगस्त

-

■ 25 अगस्त

-

■ 26 अगस्त

-

■ 27 अगस्त

-

■ 28 अगस्त

-

■ 29 अगस्त

-

■ 30 अगस्त

-

■ 31 अगस्त

-

इसे भी जानिये

भारतीय स्वतंत्रता के प्रमुख नारे

क्र.	प्रमुख नारे	नाम
01.	इन्कलाब जिंदाबाद	भगत सिंह
02.	दिल्ली चलो	सुभाषचंद्र बोस
03.	करो या मरो	महात्मा गांधी
04.	जय हिन्द	सुभाषचंद्र बोस
05.	पूर्ण स्वराज	जवाहर लाल नेहरू
06.	वेदों की और लौटो	दयानंद सरस्वती
07.	आराम हराम है	जवाहर लाल नेहरू
08.	हे राम	महात्मा गांधी
09.	भारत छोड़ो	महात्मा गांधी
10.	जय जवान, जय किसान	लाल बहादुर शास्त्री- 1965 पाकिस्तान युद्ध के समय
11.	वन्दे मातरम	बंकिमचन्द्र चॅटर्जी

कविता

मोह मदिरा छोड़ दो

सिद्धांतसागर जी महाराज

मस्ताने मतवाले चेहरे पर
खूब रिझाते
मेरे मुख आकर्षण वे पागल हो जाते
भूल जाते वासना में,
पुद्गलों की कामना में
प्यार का करते दिखावा,
खूब करते बस छलावा
करते वादा भूलते इरादा
मोह लेते धोका देते
सत्य रहता है ठगा सा समझ ले
सब है दगा सा मोह मदिरा छोड़ दे
प्रभु से नाता जोड़ ले

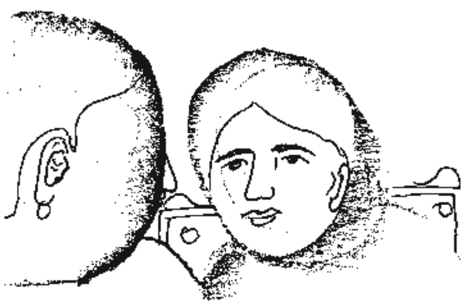

दिशा बोध

अतिथि- सत्कार

1. बुद्धिमान लोग इतना परिश्रम करके गृहस्थी किसलिए बसात हैं ? अतिथि को भोजन देने और यात्री की सहायता करने के लिये ।
2. जब घर में अतिथि हो, तब चाहे अमृत ही क्यों न हो, अकेले नहीं लेना चाहिये।
3. घर आये हुए अतिथि का आदर-सत्कार करने में जो कभी नहीं चूकता, उस पर कभी कोई आपत्ति नहीं आती।
4. जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है।
5. पहले अतिथि को जिमाकर, उसके पश्चात् बचे हुए अन्न को जो स्वयं खाता है, क्या उसे अपने खेत को बोने की आवश्यकता होगी ?
6. जो पुरुष बाहर जाने वाले अतिथि की सेवा कर चुका है और आने वाले अतिथि की प्रतिक्षा करता है, ऐसा आदमी देवताओं का अतिप्रिय अतिथि बनता है।
7. हम अतिथि-सेवा के माहात्म्य का वर्णन नहीं कर सकते कि उसमें कितना पुण्य है । क्योंकि अतिथि-सेवा का महत्त्व भी अतिथि की योग्यता पर निर्भर है।
8. जो मनुष्य अतिथि-सत्कार नहीं करता, वह एक दिन कहेगा - मैंने परिश्रम करके इतना धन वैभव जोड़ा पर हाय ! सब व्यर्थ ही हुआ, क्योंकि यहाँ सुख देने वाला कोई नहीं है।
9. सम्पत्तिशाली होते हुए भी जो अतिथि का आदर-सत्कार नहीं करता, वह मनुष्य नितान्त दरिद्र है।
10. पारिजात एक पुष्प सूँघने से मूर्झा आ जाती है, पर अतिथि का मन तोड़ने के लिये एक दृष्टि (आँख फेर लेना) ही पर्याप्त है।

अवसाद हटाये पूर्ण जीवन जिये

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

अवसाद से तात्पर्य मनोगत नकारात्मक भावों से है या मनोविज्ञान के अनुसार मनोभावों संबंधी दुखों से है। जो इससे प्रभावित होता है उसे सुख, शांति, सफलता तथा संतोष सभी निरर्थक लगने लगते हैं, उसका पल-पल बेचैनी में गुजरने लगता है, वह अपने आपको लाचार और निराश महसूस करता है। उसे मित्र परिवार यहां तक जिनने जन्म दिया वे माता-पिता सब स्वार्थी नजर आने लगते हैं। इस अवस्था में पूज्य पुरुषों की सलाह भी अप्रिय लगती है। भौतिकता के महाविकास से उत्पन्न प्रतिस्पर्धा ही इस समस्या की जननी है। विश्व में अनेक ऐसी बीमारियां हैं, जो शरीरगत होने से उनके कारण और निदान पर्याप्त शोधों से साध्य एवं समाधानपरक हैं, परन्तु मानसिक अवसाद एक ऐसी बीमारी है जो मनोगत होने से उसके निदान हेतू सभी शोध पर्याप्त हल नहीं प्राप्त कर पाये हैं, इससे पूरा विश्व चिंतित है जिसका समुचित समाधान अभी तक प्राप्त नहीं हो पाया हैं।

मनोविश्लेषकों के अनुसार अवसाद के कई कारण हो सकते हैं। यह व्यक्ति की सोच तथा उसकी परिस्थितियों के साथ उसके मूल व्यक्तित्व पर निर्भर करता है।

मानसिक अवसाद में व्यक्ति की लगातार उदास मनोदशा, गतिविधियों में अरूचि, चिड़चिड़ापन आ जाना आदि दैनिक क्रियाकलाप अवरूद्ध होकर आर्थिक मानसिक और शारीरिक हानि होने से भविष्य अंधकारमय प्रतीत होने लगता है। यह समस्या जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों से होने वाली परेशानियों से हो सकती है। नये अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि उक्त कारणों से मस्तिष्क के काम करने के तरीके में बदलाव आ सकता है। साथ ही दिमाग में तंत्रिकाओं के कुछ सर्किट की गतिविधयों में परिवर्तन भी इसका हिस्सा को सकता है।

आर्थिक उन्नति के साथ भौतिक उन्नति भी पूरे विश्व में हो रही है, इसकी होड़ में देश दुनिया में सर्वत्र निराशा, तनाव, अशांति और अरूचि हो रही है जिससे अनेक शारीरिक बीमारियों से व्यक्ति ग्रसित होकर कुंठा और तनाव में आ जाता है। जिसका दुष्परिणाम ही **आत्महत्या** है।

अवसाद पीड़ित दुनियाः-

देश दुनिया में मानसिक अवसाद से आत्महत्या का प्रतिशत बढ़ रहा है। इसके कारणों पर अध्ययन कर समुचित समाधान खोजा जाये तो इसे संतुलित करना कोई जटिल समस्या नहीं। ब्रिटेन की ड्राई-क्लीनिंग और लान्ड्री सर्विस जिपटेप ने अध्ययन करने पर पाया कि टॉप 20 शहरों में सबसे ज्यादा तनाव वाले शहरों में भारत के भी 4 शहर हैं। दिल्ली 10वें, मुम्बई 9वें कोलकाता 13वें और बैंगलुरु 20वें नम्बर पर हैं। जबकि दुनिया में बगदाद (ईराक) प्रथम,

दूसरे नंबर पर काबुल, ढाका सातवें नंबर पर और करांची 18वें नंबर पर है, यहां दिल्ली से ज्यादा तनाव हैं। वही टॉप 10 सबसे कम तनाव वाले शहरों में जर्मनी का स्टेटगार्ड नंबर एक पर, लक्जमवर्ग सिटी दूसरे, तीसरे पर हनोवर है। एजेंसी ने 500 से अधिक जगहों पर आंकडे जुटाये जो 17 वर्गों में विभक्त हैं। मानसिक शांति बैंक बैलेंस और जॉब सिक्योरिटी के मामले में जर्मनी सबसे अच्छी जगह है। वहां सबसे कम तनाव वाले 4 शहर हैं, सिडनी एकमात्र शहर है जो यूरोप से बाहर का है। अध्ययन के अनुसार सबसे कम तनाव वाले शहर स्टटगार्ड के लोग चिंतामुक्त जीवन जी रहे हैं । वहां की इकाँनोमी भी बहुत मजबूत है। यह शहर पोर्सेवास और मर्सेडीज वेंज जैसी कंपनियों का घर है। यहां सबसे ज्यादा ग्रीन स्पेश भी है। स्थानीय लोगों के अनुसार हरियाली (ग्रीनरी) तनाव कम करने में सबसे कारगर है। सिंगापुर और ताईपेई में रहने वाले लोग सबसे ज्यादा संतुष्ट हैं। जबकि जर्मनी के लिपजिंग और फ्रांस के मोतयेलियरे में सबसे कम ट्राफिक समस्या है। रहने के लिये सबसे सुरक्षित शहरों में अबुधावी नंबर एक एवं जापान का ओसाका शहर दूसरे नम्बर पर है। सबसे कम प्रदूषण वाला शहर अमेरिका का मियामी है। लक्जमवर्ग मानसिक स्वास्थ्य के मामले में पहले नम्बर पर है। (दैनिक भास्कर से साभार)

वर्ष 1990 में डेली द्वारा हुये सर्वे अनुसार, अवसाद मनोगत बीमारी है। पूरी दुनिया की 4 महिलाओं में से एक महिला और 10 पुरुषों में से एक पुरुष अवसादी है। 97 प्रतिशत अवसादियों में आत्महत्या की प्रवृत्ति पाई गयी है। 17 प्रतिशत ने तो आत्महत्या कर ही ली, जिनमें किशोरों की संख्या 47 प्रतिशत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, अवसाद अब बड़े रोग का आकार ले चुका है। आयुर्विज्ञान के अनुसार अवसादी व्यक्ति स्वयं को लाचार और निराश मानकर सामाजिक दूरियां बनाता जाता है, धीरे-धीरे परिवार और मित्रों से भी पृथक को लाचार और निराश मानकर सामाजिक दूरियां बनाता जाता है, धीरे धीरे परिवार और मित्रों से भी पृथक होकर अंदर ही घुट-घुट कर आत्महत्या कर बैठता है।

लेसेंट साइक्रेटी की रिपोर्ट अनुसार भारत में 1990 की तुलना में वर्ष 2017 में मानसिक दोगुने हो गये। सबसे ज्यादा डिप्रेशन महिलाओं और दक्षिण भारतीयों में पाया गया। उत्तर भारतीय कम चिंता करने वाले हैं। रिपोर्ट में बताया गया कि तमिलनाडु में इसकी संख्या अधिक है। यह भी पाया गया कि प्रत्येक 7 भारतीय में से एक भारतीय मानसिक रोगी है। रिपोर्ट के अनुसार देश की जनसंख्या का 7.5 हिस्सा मानसिक विकारों से पीड़ित है। दुनिया में भी डिप्रेशन के मामले प्रतिवर्ष बढ़ते हैं वर्ष 2015 में दक्षिण पूर्व एशिया में ऐसे रोगियों की संख्या 325 करोड़ थी। यह ऐसी बीमारी है जिसका उपचार दवा नहीं दुआ है। दुआ के लिये जो आवश्यक है उसे जरूर जाने समझें तथा आत्महत्या के विचारों से हटकर, इन उपायों को उपनायेंगे, तो शेष जीवन सुख शांतिमय अवश्य रहेगा।

जरा सोचिये असफलता स्थाई नहीं-

हर निराशा आशा की जननी है, हर विफलता में समय आने पर बदलती है। जैसे मरण के

बाद जन्म अवश्यंभावी है। वैसे ही प्रत्येक प्रतिकूलता एक न एक दिन अनुकूलता में अवश्य ही परिवर्तित होती है। विपरीत परिसिथितियों में धैर्य अवश्यमभावी है। एक बार असफल होने पर प्रयास बंद कर, नकारात्मक सोचना, जिससे व्यक्ति कुंठित विचारों में पहुँचकर मानसिक तनाव से घिर जाता है वह धीरे-धीरे समाज, परिवार से छुप-छुपकर अपने आपको अकेला असहाय और घृणित महसूस करता हुआ, मानसिक अवसाद से पीड़ित होकर, अपने वर्तमान पवित्र जीवन से विदा लेने की सोच में डूबकर आत्महत्या को ही अंतिम हथियार मानता है। जो मानव की कायरता है। जिस मानव को वीर संज्ञा दी गई हो, उसे यह तो कलंकित करने का घिनोना कृत्य है। बहुधा मानसिक अवसाद की दशा में आत्म हत्यायें हुई हैं, किसी ने बहुत सुंदर लिखा हैः-

सफलता ना तो जादुई है न ही रहस्यमयी है, यह अच्छी आदतों और मेहनत का स्वाभाविक परिणाम है।

महान लोगों की सफलता का राज यही है कि उन्होंने अनेक प्रतिकूलताओं में भी अनुकूलताओं की उम्मीद पर विश्वास रखा।

यह लाइलाज रोग नहीं है, यदि सही समय पर उचित परामर्श प्राप्त हो गया तो उत्पन्न परिस्थितियों की प्रतिकूलताएं अनूकूलता में परिवर्तित होकर इससे निजात दिला सकती हैं।

स्टीफन हाकिंग को मोटर न्यूरान नाम की असाध्य बीमारी थी, इस तरह की बीमारी से कोई भी व्यक्ति तीन से पांच वर्ष तक जीवित रहता है। लेकिन हाकिंग बीमारी के बाद 50 साल जीवित रहे। वे ऑटोमेटिक व्हील चेयर का इस्तेमाल करते थे। वे बोल नहीं पाते थे, इसलिये कम्प्यूटराइज्ड वाइस सिथेसाईजर उनके दिमाग की बात सुनकर मशीन के जरिये उनकी आवाज बन जाती थी, वे केवल जिये ही नहीं अपितु इस तरह जिये कि दुनिया को राह दिखा गये। उन्होंने 1993 मे केम्ब्रिज विश्वविद्यासलय से पी.एच.डी. की। 2006 में उन्होंने कहा था कि मैंने अपनी अधिकतम जिंदगी, जल्दी मौत की आशंका के बीच गुजारी, पर आत्महत्या नहीं की।

जब तक साँस है, टकराव मिलता रहेगा, जब तक रिश्ते हैं घाव मिलता रहेगा।
अगर हमारे कर्म व भावना अच्छी है, तो गैरों में भी लगाव मिलता रहेगा।

वर्ष1997 में मनो विशेषज्ञ कैथरीन जी वोल्फ को ए.एल.एस बीमारी के बारे में पता चला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ह्यमून कम्प्यूटर इंटरेक्शन पर उनके छह पेटेंट और 100 से ज्यादा रिसर्च पेपर हैं। बीमारी का पता चलने के बाद वे मानव कम्प्यूटर की बातचीत में विशेषज्ञ बन गयी। बीमारी के 18वर्ष बाद फरवरी 2018 तक वो न सिर्फ जीवित रही, बल्कि शोध के क्षेत्र में सक्रिय रहीं, पर जीवन से हारी नहीं।

कम्प्यूटर साइंटिस्ट हाल फिनी को भी मोटर न्यूरान डिसीज थी। 2009 में बीमारी का पता

चला, फिर भी उनका कहना था कि बीमारी होना किसी को मौत की सजा होना नहीं है। यह शरीर पर असर तो कर सकती है, पर दिमाग पर नहीं। बीमारी कोई भी हो, पहले मन को तोड़ती जरूर है, पर जिसने मन मस्तिष्क को मजबूत कर लिया, उससे बड़ी-बड़ी बीमारियां हारी ही हैं।

भारत की आजादी की लड़ाई में सरदार भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसों पर अंग्रेजों द्वारा अनेकों यातनायें दी गयीं, पर उन्होंने अंत तक आत्म विश्वास से संघर्ष जारी रखते हुये वीर बने रहकर प्राण दे दिये, पर झुके नहीं। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, जवाहर लाल नेहरू ने भी अंग्रेजों के अनेक जटिल कानूनों को दरकिनार करते हुये देश को आजाद कराया। यह आत्मबल से संभव हुआ। आज छोटे-छोटे कष्टों से घबड़ाकर आत्म विश्वास हीन हो लोग आत्मघात करते हैं उन्हें इन दृढ़विश्वासी जनों की कथायें पढ़कर सीख लेना चाहिये कि आत्महत्या समस्या का समाधान नहीं, अपितु अनेकानेक समस्याओं की जननी है। एक आत्महत्यारा स्वयं तो पावन मनुष्य योनि से वंचित होकर असमय में कुगति में जाकर अनेक कष्टों के अथाह सागर में जा पहुँचेगा दूसरी ओर आपके इस घृणित कृत्य से आपका पूरा परिवार जीवन भर सामाजिक एवं कानूनी उलझनों से गुजरेगा। इन बिंदुओं पर विचार करने वाला कभी ऐसा दुःसाहस नहीं करेगा। संसार दुखों का घर है कहते हैं, यहां कोई सुखी नही हैं। किसी के पुत्र नहीं , किसी की पत्नि कलहारी है, किसी को भयानक व्याधि है, कोई पड़ोसी की दुश्मनी का शिकार है, तो कोई यह सोच सोचकर कि हम पीछे क्यों है। पर यह नही विचारता है कि जो हमसे पीछे है उनसे तो कई पायदान हम आगे हैं। यही नकरात्मक विचारधारा हमारे दुखों का मूल कारण है। जबकि पशु-पक्षी भी हमारे जैसे इस दुनिया में जीवात्मा है। अंतर केवल इतना है कि हमें पूर्व शुभ कर्मानुसार उच्च मनुष्य गति मिली, पशु पक्षियों को निश्चित ही अशुभ कर्मों के फलस्वरूप पशु गति मिली। पशु पक्षियों का तो घर द्वार भी नहीं, भूख प्यास में जो मिल गया, उसी से तृप्त हो जाते हैं। हम मनुष्यों को पुण्य के योग से जो कुछ भी मिला है उसमें सन्तुष्ट न होकर और मिले और मिले की तृष्णा सताती ही रही है इसी तृष्णा ने इस विवेकी मनुष्य को प्रतिस्पर्धा का पर्याय बना दिया, जो सुख शांति से जीने नहीं देती, इसी की ऊहापोह में दिन रात बेचे हो स्वस्थ मानस भी सदैव अस्वस्थ बना रहता है। चाह पूरी करने हेतू साम, दाम, दंड और भेद का सहारा लेकर कपटादि द्वारा कार्य सिद्ध करने की इच्छा होती है। उसके अर्थ अनेक उपाय सोचता है, नाना प्रकार रूप दुष्प्रवृत्ति से कपट के वचन कहता है, शरीर की कपट रूप अवस्था करता है, बाह्य वस्तुओं को अन्यथा बतलाता है, तथा उसके अर्थ अनेक चेष्टायें करता है, बहुत कष्ट सहता है, सेवा करता है, विदेश गमन करता है, जिसमें मरण हो जाये ऐसा भी छल करता है। कपट प्रगट होने पर स्वयं का बुरा हो, मरणदिक हो उनको भी नही रहता। यदि छल द्वारा कार्य सिद्ध न हो तो स्वयं बहुत संतापन होता है, ऐसा व्यक्ति क्रोधावेश में अपने अंगों का घात करता है, तथा विष आदि से आत्मघात कर लेता है। संतापवान ही मानसिक अवसाद में पहुंचकर आत्महत्या को अपनाता है। पंडित दौलतमराम जी ने लिखा है-

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान।
कबहुं न सुख संसार में सब जग देख्यो छान ॥

जीवन का आनंद वही लोग उठा पाते हैं, जिनके सोचने का ढंग सकारात्मक होता है। इस दुनिया में बहुत लोग इसलिये दुखी नहीं हैं कि उन्हें किसी चीज की कमी है, अपितु इसलिये दुखी हैं कि उनके सोचने का ढंग नकारात्मक है।

चील की उड़ान देखकर चिड़िया कभी डिप्रेशन में नहीं आती, वो अपने अस्तित्व में मस्त रहती है।

जिन्हें जीना आता है, वे अंधेरे में भी सुखद जीवन यात्रा कर लेते हैं, पर जिन्हें जीना नहीं आता, वे उजाले में भी नहीं जी पाते। बुंदेली में कहावत है कि घूरे (कचडा घर) के भी दिन फिरते हैं। जिस घूरे पर दुनिया गंदे से गंदा कचड़ा फेंककर अपना घर स्वच्छ रखता है, उसी घूरे का कचड़ा सड़कर एक दिन खाद बनकर सुंदर फसल देकर हमें सुस्वादु भोजन देता है। पाप का फल दुख है, पुण्य का फल सुख है संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसने पुण्य पाप दोनों न किये हों। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि दुख के बाद सुख आयेगा ही आयेगा। धैर्य से ही सफलता आयेगी, घबडाहट तो दुख की ही जननी है। विपत्ति और सम्पत्ति ये दो सगी बहिनें हैं। संपत्ति रूप बहन को सभी पसंद करते हैं पर विपत्ति रूप बहन को दुश्मन क्यों मानते हो। वह भी तो बहिन ही है। विपत्ति के काल में दुनियां के लोग मानसिक अवसाद में आकर आत्महत्या तक कर पवित्र जीवन से विदा, ले लेते हैं।

कविता

मानवता का लक्ष्य

संस्कार फीचर्स

मानव शुभ जन्म मिलो दाव न गमावरे।
गुरु शरण आवरे गुरुवर गुण गावरे ॥
क्रोध काम माया की गतियों में भटक गये।
भोगों की चमक दमक गलियारे अटक गये ॥
ग्रीष्म की तपन पड़ी गुरु छांव आवरे ॥
सीदी सी संतों की अमृत सी धार बहे।
डूब चलो चंचल मन वचनों की धार बहे ॥
ज्ञान की जा गंगा है खूब तो नहाव रे ॥
विद्या के सागरे में ज्ञान की तरंगें है।
अंतर में डूबने की हर पल उमंगें है ॥
सद्‌गुरु के चरणों में लिफ्ट लिपट जावरे ॥

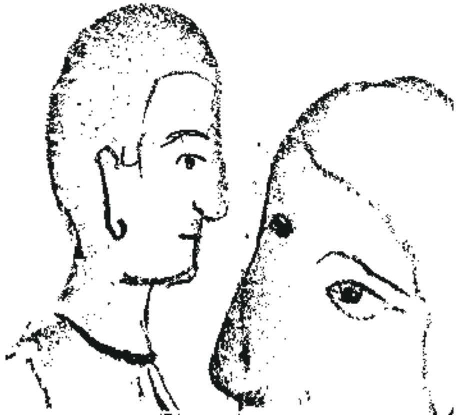

गोलाचार्यः तपस्वियों के बीच राजा बनना

✲ प्रोफेसर हम्पा नागराजैया (हम्पाना), बैंगलुरु ✲

प्रस्तावना - प्राचीन और उत्तर मध्यकाल के शिलालेख, कई देशों में पाए जाते हैं। भारत कश्मीर से कन्याकुमारी तक शिलालेखों से भरा हुआ है और उनमें से अधिकांश दक्षिण से आते हैं। तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र के दक्षिणी राज्यों में लगभग एक लाख शिलालेख हैं जो ऐतिहासिक महत्त्व की अमूल्य जानकारी रखते हैं। कर्नाटक में खोजे गए लगभग 30,000 शिलालेखों में से 565 पवित्र स्थान श्रवणबेलगोला में आते हैं। दुनिया में कहीं भी इतनी किस्मों के इतने शिलालेख और कालक्रम के अनुसार एक हजार वर्षों में फैले हुए, एक ही स्थान पर नहीं पाए जाते हैं। अपने संख्यात्मक महत्त्व के अलावा, ये अभिलेख-सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास, भाषा, विज्ञान के अध्ययन के लिए एक वास्तविक स्रोत हैं। इनका धर्म, पुरालेख, छंद, साहित्य रूप में विशेष महत्त्व है। कर्नाटक में मौजूद लगभग 3000 जैन शिलालेखों में से लगभग 150 संस्कृत में हैं और उनमें से लगभग सभी कन्नड़ अक्षरों में लिखे गए हैं। दिलचस्प रूप से 75% संस्कृत पुरालेख श्रवणबेलगोला से आते हैं।

एपिग्राफिया कर्नाटका खंड दो, जो विशेष रूप से श्रवणबेलगोला के लिए समर्पित एक खजाना है, जिसमें ऐतिहासिक महत्त्व के रत्नों से जड़े रिकॉर्ड (शिलालेख) शामिल हैं। भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरालेख के अध्ययन के लिए उनके महत्त्व को कोई अतिशयोक्ति नहीं है। एक सदी से भी अधिक समय से विद्वानों ने कई मौलिक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया है। हालांकि, ऐसे क्षेत्र हैं जो हाल के शोधों का उपयोग करते हुए व्यापक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किए जाने के योग्य हैं।

यह लेख, उस दिशा में एक प्रयास, तपस्वी गोलाचार्य के विशाल व्यक्तित्त्व और प्रभाव की बारीकी से जांच करेगा जैसा कि श्रवणबेलगोला से तीन संस्कृत शिलालेखों में दर्ज है। ईस्वी सन् 1 115 के 173, ईस्वी सन् 1145 के 156 और 1163 के 71, और कुछ अन्य सहायक अभिलेख अन्यत्र पाए गए हैं।

यह रेखांकित किया जाना चाहिए कि श्रवणबेलगोला से तीन संस्कृत अभिलेखों में तपस्वी गोलाचार्य न केवल एक महत्त्वपूर्ण तपस्वी के रूप में, बल्कि जैन भिक्षुओं के प्रमुख के रूप में भी हैं। उन्हें केवल गोलमुनि या गोलायती के रूप में संदर्भित नहीं किया जाता है। इसके बजाय उन्हें गोलाचार्य के रूप में उल्लेख किया गया है, जो जैन संतों की सभा में उनकी प्रमुखता का सुझाव देते हैं। वे भिक्षु वीर नंदी के वंश से थे, जो उनके प्रत्यक्ष गुरु थे। श्रवणबेलगोला के चार्टर्स नं. 156, 173 आदि ने भिक्षुओं के वंश या गुरु (शिक्षक) और शिष्य (छात्र) उत्तराधिकारी को दर्ज किया है जो जैन सिद्धांतों के स्वामी थे और पद्मनंदी उर्फ

कुन्दकुन्द के मूलसंघ देसिगण पुस्तक गच्छ के थे। संत वीरनंदी, उनके शिष्य गोलाचार्य, उनके शिष्य त्रिकालयोगी। वह अभयनंदी, सकलचंद्र, मेघचंद्र त्रैविद्य, प्रभाचंद्रमुनि और अन्य प्रसिद्ध तपस्वियों द्वारा सफल हुए। शिलालेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि गोलाचार्य ने स्थायी छाप छोड़ी थी। उनका नाम और प्रसिद्धि उनके जीवनकाल में (दसवीं शताब्दी में) दूर-दूर तक फैल गई थी, कई शताब्दियों तक गूंजती रही। श्रवणबेलगोला के शिलालेखों में नाम का उल्लेख अचूक शब्दों में गोलराज के रूप में किया गया है और कहा गया है कि वह नून चंदिल वंश से सम्बन्धित थे। यह स्पष्ट है कि गोलाचार्य एक राजा थे। गोला समुदाय में एक उप समुच्चय को राजगुल्ला के नाम से जाना जाता है। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि राजगुल्ला शाही चंदेलवंश गोल्लों के प्रत्यक्ष वंशज हैं। कवि नयसेन (1111 सीई) की कविता धर्मामृत में गोल्ल देश का नाम आता है। एक राजा का अपना सिंहासन त्यागना और साधु बनना इतिहास के लिए कोई नई बात नहीं हैं। श्रवणबेलगोला, वह स्थान जहाँ गोलाचार्य की मूर्तियाँ हैं, शाही घरानों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सांसारिक हितों को त्यागने और भिक्षु रूप को स्वीकार करने के उदाहरण देखे हैं। हमारे पास मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के उदाहरण हैं जिन्होंने अपना सिंहासन त्याग दिया, एक भिक्षु बन गये और अपने शाही शिक्षक प्रेरित भद्रबाहु का अनुसरण किया और श्रवणबेलगोला पहुंचे। एक और उदाहरण शाही राष्ट्रकूट वंश के अंतिम सम्राट इंद्रराज चतुर्थ (सीई 983) का है, जिन्होंने चंद्रगिरि के शिखर पर यहां अंतिम सांस ली, दो अदिनांकित लिथिक रिकार्ड, लेकिन स्पष्ट रूप से वर्तमान युग की दसवीं शताब्दी से संबंधित हैं।

कालानुक्रमिक रूप से, कोप्पला के शिलालेख श्रवणबेलगोला रिकार्ड (शिलालेख) से पहले के हैं। कोप्पला शिलालेखों की भाषा कन्नड़ है, जबकि गोलाचार्य के विशाल व्यक्तित्व का वर्णन करने वाले सभी तीन शिलालेख संस्कृत में हैं। कर्नाटक के एक जिला मुख्यालय कोप्पला से दो अभिलेखों का सारांशः1 तालागरसा, जिनधर्म रत्ननिधि गोलाचार्य के चरण कमलों में मधुमक्खी, जो प्रसिद्ध जिनधर्म का खजाना था तालागरसा को एक तोरण बना दिया गया था, जो एक उत्कृष्ट अलंकृत उत्सव था जो प्रवेश द्वारों पर लटका हुआ था और जानवरों और पक्षियों के डिजाइन के साथ बनें थे। गोलाचार्य के प्रमुख भिक्षु शिष्य त्रिकालयोगी मुनिन्द्र ने कठिन संस्कारों के साथ शरीर को वश में करके घोर तपस्या की, गर्मी के गर्म मौसम में उन्होंने पत्थर के शिलाखंडों पर ध्यान किया, पेड़ों की तलहटी में खड़े हो गए, जबकि काले बादल गरजे और लगातार बारिश हुई, बर्फीली ठंड में पानी में खड़े रहे वह त्रिकालयोगी की एकाग्रता और दृढ़ संकल्प था, तपस्वी जिन्होंने तीन (गर्म, ठंडे और बरसात) मौसमों में आत्म-नियंत्रण किया था। अन्य साक्ष्यों की सहायता से अदिनांकित अभिलेख को दसवीं शताब्दी के अंतिम दशक का माना जा सकता है। यह स्पष्ट रूप से गोलाचार्य के विशाल

व्यक्तित्व का वर्णन करता है, प्रसिद्ध व्यक्ति जो कुंदकुंद आचार्य के मूलसंघ पुस्तक गच्छ देशिगण के वंश से सम्बन्धित थे। चंद्रकीर्तिसूरी के शिष्य गुणसेन कविता-गमकत्व-वादी वाग्मित्व में पारंगत थे। गुणसेन के सहयोगी गोलाचार्य ने राजघरानों से सम्मान अर्जित किया था। उन्होंने अहंकार और पांच इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की थी, अर्थात् आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा को वश में किया था। जोश और भ्रम से मुक्त, गोलाचार्य की शांति, तटस्थता और सामंजस्यपूर्ण रवैया पारदर्शी था। उन्होंने अपने शिष्य को पारम्परिक ज्ञान में विशेषज्ञ बनना सिखाया था। संक्षेप में वे भिक्षुओं की मेजबानी में सर्वोच्च थे। (हम्पानाः कोप्पला शिलालेखों का जैन कॉर्पस। पीपी 49-51) इस प्रकार दो कोप्पला शिलालेख गोलाचार्य की आध्यात्मिक उपलब्धियों का एक प्रामाणिक चित्र चित्रित करते हैं, जिसमें उनके प्रबुद्ध ज्ञान और भक्तों पर उनका प्रभाव शामिल है। वह मोक्ष के सिद्धांतों में पारंगत थे और पारंपरिक विहित ज्ञान में सरल थे। वस्तुतः उन्होंने सुख या दुख के लिए जिम्मेदार कर्म कहे जाने वाले शाश्वत शत्रुओं पर अपनी जीत की मुहर लगा दी थी। आइए चंद्रगिरि, श्रवणबेलगोला से तीन संस्कृत चार्टर (शिलालेख) की जांच करें। इन तीन लंबे अभिलेखों में कई पंक्तियाँ समान हैं और शब्दशः दोहराई जाती हैं।

1. निम्नलिखित पाठ गंगराज की पत्नी लक्ष्मीमती दंडनायकी द्वारा श्री मेघचंद्र-त्रैविद्यदेव की स्मृति में स्थापित एक अभिलेख से है। वह श्री प्रभाचन्द्र सिद्धांतदेव की शिष्या थीं जो मेघचंद्र-त्रैविद्यदेव के प्रमुख शिष्य थे। मेघचंद्र-त्रैविद्यदेव की मृत्यु मार्गशिरा के शुक्ल पक्ष की 14 तिथि, शक 1037 में गुरुवार, 2 दिसम्बर 1115 ए डी को हुई थी। मैं रिकार्ड से केवल प्रासंगिक पंक्तियों को उद्धृत करता हूँ जिसमें 173 लाइनें हैं सारांश में गोलाचार्य, जिनकी बुद्धि की शक्ति दर्शन के सागर की लहरों द्वारा पाप, आत्म-संतुष्टि और अभिमान से धोकर उज्ज्वल किया गया है, जो पूर्ण आत्मा आदि जैसी चीजों को उजागर करने में सक्षम है और जिसके चरण कमलों की तेज सूर्यों द्वारा बढ़ाई गई है, राजाओं के मुकुट, विजयी हों। प्रसिद्ध गोल्ल देश के शासक, राजा नूत्न चंदेल के परिवार का एक शिखा-रत्न, किसी कारण से गोलाचार्य के नाम से, रत्नों के शुद्ध त्रय से सुशोभित एक मुनिपा बन गया, जो विद्वान् की पंक्ति में था। वीरनंदी (सुप्रा 156 (127) पृ. 413)

2. शिलालेख में प्रभाचंद्र -सिद्धांतदेव की मृत्यु और उनके शिष्य होयसल राजा विष्णुवर्धन की प्रमुख रानी पट्टमहिषी शांतलादेवी की मृत्यु का भी उल्लेख है। यह एक बहुत बड़ा रिकार्ड है जिसमें 42 से 54 तक की 192 पंक्तियों में गोलाचार्य की बात की गई है, संक्षेप में सी के शासक ने गोल्ला देश मनाया, राजा नूत्न चंदेल के परिवार का एक शिखा-रत्न किसी कारण से, गोलाचार्य के नाम के तहत, रत्नों के शुद्ध त्रय से सुशोभित एक मुनिपा बन गया। विद्वान्, वीरनंदी के प्रमुख वह, जिसकी बुद्धि की शक्ति पाप से धोकर, आत्म-संतुष्टि और

अभिमान से दर्शन के सागर की लहरों से उज्ज्वल हो गई है, जो पूर्ण आत्मा, आदि जैसी चीजों को उजागर करने में सक्षम है और जिसके चरम कमलों के तेज को सूर्यों ने बढ़ाया है, राजाओं के मुकुट विजयी हों। उनके शिष्य प्रख्यात त्रिकालयोगी थे (173 (140) पृ. 426)।

3. होयसल राजा के महाप्रधान और भण्डन हुल्लराज द्वारा स्थापित शिलालेख में उनके गुरु देवकीर्तिपंडित की स्मृति में 115 पंक्तियाँ हैं और 38 से 54 तक केवल आठ पंक्तियाँ गोलाचार्य का संदर्भ देती हैं। सारांशः प्रसिद्ध देशी-गण में मूल-संघ में नंदी-गण का एक उपखंड, जो उपरोक्त जैसे प्रमुख संतों के उत्तराधिकार का निवास स्थान था, एक बुद्धिमान ऋषि का उदय हुआ, जो गोलाचार्य के रूप में प्रसिद्ध था, जो कि गोल्ल प्रांत के पूर्व शासक थे, जो पुनर्जन्म के डर दीक्षित हुए। उनके शिष्य प्रख्यात त्रिकालयोगी थे। (आर) नंबर 71(64) पृ. 378। कोप्पला श्रवणबेलगोला और अन्य स्थानों के कुछ शिलालेखों में त्रिकालयोगीश्वर (त्रिकलययोगी, त्रिकालयोगी-भिन्न रूप हैं) इस युग (सी-10 वीं शताब्दी) के जंगमतीर्थ के रूप में प्रमुखता से मिलते हैं। उसका विस्तार से वर्णन किया गया हैं। कोप्पला (पीपी. 64-66) के एक लिथिक रिकार्ड में कहा गया है कि त्रिकालयोगी ने 1 नवम्बर 977 को कोप्पला में अंतिम सांस ली। कोप्पला और श्रवणबेलगोला रिकार्ड में वर्णित ऋषि त्रिकालयोगी एक ही है। गोलाचार्य का वर्णन संस्कृत के सृगधरा और रथोद्धता वृत्त छंदों में श्रवणबेलगोला अभिलेखों में और कोप्पला शिलालेखों में वृत्त और कांडा छंदों में किया गया है। गोलाचार्य के वरिष्ठ शिष्य त्रिकालयोगी मुनिन्द्र की अतुलनीय तपस्या का वर्णन अनेक अभिलेखों में विस्तार से किया गया है। एक दंडिन त्रिकालयोगी उर्फ त्रिकालययोगी, भट्टाराक, शानदार गोलाचार्य के असाधारण रूप से प्रतिभाशाली शिष्य, केवल तीर्थंकरों के पहले भिक्षु शिष्य गणधरों के लिए तुलनीय हैं। उन्होंने अतापना, तरुमूला और विनयस्त निवास तपस में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और अंत में संल्लेखना के व्रत का पालन किया, उन्होंने सोमवार 1, नवम्बर 997 ई. को कोप्पला में जन्म और मृत्यु के चक्र से अंतिम मुक्ति प्राप्त की, जिसे प्राचीन आदितीर्थ के रूप में भी जाना जाता है।

जक्कबे कांति, एक नन और त्रिकालयोगिमुनिपा के सम्मेलन, ने कोप्पला में एक निशिधि, एक उपमा बनाया। (हम्पानाः कोप्पला इंस्क्रिप्शन्स का कॉर्पस पी.पी. 41-44) पूर्वी चालुक्य राजा भीम की अवधि से संबंधित एक शिलालेख, जिसने लिले विष्णुवर्धन-महाराजा को जन्म दिया था में कहा गया है कि उनके गुरु त्रिकालयोगी सिद्धांतदेव भी राजकुमार विमलादित्य के शिक्षक थे। इसी अभिलेख में कहा गया है कि त्रिकालयोगी ने प्रसिद्ध रामकोंडा का निर्माण किया था। वेंगी (पूर्वी चालुक्य) चालुक्य राजा अम्माराज प्रथम (921-927), भीमराज द्वितीय (935-945) अम्मराज द्वितीय (945-970) और

भीमराज तृतीय (970-980) में सर्वलोकाश्रय के विशेषण थे। वे जैन धर्म के महान् संरक्षक थे।

अब कुछ प्रश्न उठते हैं -

1. क्या गोलाराजा शुरूआत में जैन और गोल्ला जैन थे ?

2. क्या गोलराजा धर्मांतरित थे - यदि हां तो यह कब और कहां हुआ ?

3. उन्हें जैन साधु रूप से किसने दीक्षित किया ?

4. क्या एक धर्मांतरित भिक्षु बन सकता है और पारंपरिक जैन भिक्षुओं का मुखिया भी बन सकता है जो धर्मांतरित नहीं थे ?

ये यक्ष प्रश्न हैं और हल किए जाने वाले प्रश्नों के रूप में बने रहते हैं। न तो श्रवणबेलगोला और न ही कोप्पला शिलालेखों में उनकी तिथि और उनके जीवन की कुल अवधि के विवरण का उल्लेख है। उनकी तिथि के प्रत्यक्ष और स्पष्ट आलेख के अभाव में, हमें अन्य पुष्ट स्रोतों की तलाश करनी होगी। सौभाग्य से शिलालेख गोलाचार्य के मठवासी जीवन की लगभग ठोस तारीख का सुझाव देने के लिए जानकारी प्रदान करते हैं। चूंकि उनके प्रत्यक्ष शिष्य त्रिकालयोगी की मृत्यु वर्ष सीई 977 में हुई थी, यह स्पष्ट है कि गोलाचार्य उस अवधि से पहले रहते थे और उपदेश देते थे। उनका जीवन काल 900 और 970 सीई के बीच उचित रूप से तय हो सकता है। गोलाचार्य बहुत सारे प्रशासकों के समकालीन थे- राष्ट्रकूट और गंग राजवंशों के प्रसिद्ध राजा, आदरणीय तपस्वी और साहित्यिक प्रकाशक। दो प्रमुख पितृसत्तात्मक तपस्वियों, गोलाचार्य और उनके शिष्य त्रिकालयोगी मुनिन्द्र ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और दक्षिण में दसवीं शताब्दी के धार्मिक-राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचार की भावना को बदल दिया।

संदर्भ पुस्तकें

1. लेख पम्पा विक्रमार्जुन विजयम्।

2. नेगीनाहला, एम. बी. निगन्हाला प्रबंधकाल्, हम्पी, 1999 पी.पी. 175-177।

3. एपिग्राफिया कर्नाटिका = (=ईसी), खंड॥ (संशोधित), शिलालेख संख्याः 71 (64), 156 (127), 173 (140)।

4. नागराजैय्याह, हम्पा (हम्पाना) : कोप्पला शासनगालू, मैसूर, 1998। आर्टिकल, जैन कॉर्पस ऑफ कोप्पला इंस्क्रिप्शंस/एक्सरेड, बेंगलुरु, 1999।

5. साउथ इंडिया इंस्क्रिप्शन्स (एसआईआई) खंड 403. 10 वीं सदी रामतीर्थम् गुफा शिलालेख (आंध्र) विजयनगरम् जमींदारी, विजागपट्टम डीटी. पृ. 409)

अखिल भारतीय संस्कृत विद्वत् सम्मेलनम् अखिल भारतीय संस्कृत विद्वान् सम्मेलन श्रवणबेलगोला में प्रस्तुत पत्र।

कविता

विमलनाथ भाविधि तारें

विमलनाथ स्तवन (वसन्तलिका छन्द)

यों हात जोड़ नतमस्तक नम्रता से ।
आराधना कर रहे लवलीनता से ।।
वाँछा रही न मने सब ये पुकारे ।
तीर्थंकर विमलनाथ भवाब्धि तारे ।।

मैं पुण्य हीन कुछ अर्पन को नहीं है ।
क्या अर्चना कर सकूं यह वेदना है ।।
ना ज्ञान है वचन में गुण कीर्ति गांवे ।
यों चित्त में को सत आकुलता सतावे ।।

मैं भक्ति मान सरोवर नीर लाया ।
ये गंध युक्त स्तव पुष्प मनोग्य लाया ।।
यों ज्योति कीर्तन सुदीप प्रकाशकारी ।
मेरे अनादि अघ को छन में निवारी ।।

त्रैलोक्य वैद्य भव रोग निवारते हैं ।
है शुद्ध औषध अमोघ निरामयी है ।।
श्रद्धा समेत उरसे जिसने लिया है ।
आरोग्य वर्धक रहा सुख चैनता है ।।

आनंद कुम्भ मुखमण्डल को निहारो ।
क्या विश्व में तब समान न रूप प्यारो ।।
पर्याय तो ध्रुव नहीं उसको त्यजोरे ।
आत्मा सही परम रत अपूर्व प्यारे ।।

कहानी

गज्जु कबाड़ी

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

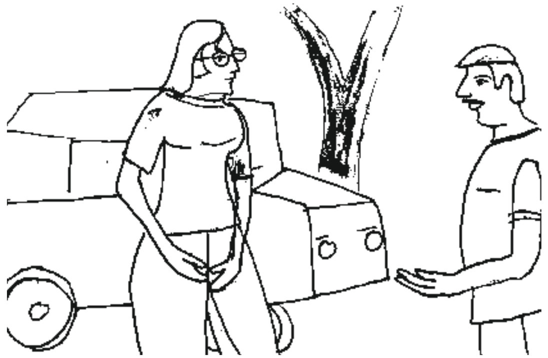

सुबह के आठ बज रहे थे प्रभात का सूर्य चमक के साथ उगा हुआ था कड़ाके की ठंड में सूर्य उग जाने से धूप का आनंद सब ले रहे थे पटना के चौराहे धीरे-धीरे चहल पहल युत्त हो रहे थे ठंड से बचने के कपड़े सब लोग अपने-अपने बंदन में डाले हुये थे कई लोग अलाव पर बैठकर हाथ-पैर सैंक रहे थे । गजानन ने भी अपने कचरे बीनने के कारण ठुठेरे हुये हाथों को सेंकना प्रारंभ किया था। हाथ सेंकते-सेंकते जब 15 मिनिट हो बीते थे तभी एक भनभनाती हुई गाड़ी खड़ी हो जाती है स्कोर्पियों की गाड़ी पार्क करने के बाद एक स्मार्ट सी लड़की गाड़ी से उतरकर बैंक के सामने पहुंच जाती है और बैंक के ए.टी.एम सेन्टर में प्रवेश कर जाती है उसे पैसे निकलाने में बड़ी परेशानी खड़ी हो जाती है क्योंकि पैसा तो निकल जाता है लेकिन एक गिड्डी 500 रूपये नोट की ए.टी.एम में फंस जाती है अनु अपने मोबाईल से बोस को बताती है सर थोड़ा अब वेट करना पड़ेगा क्योंकि ए.टी.एम में 500 रूपये की गड्डी फंस चुकी है । प्राजंल पाठक को फोन पर ही डांट कर कहता है।

अरे अनु तू परेशान क्यों हो रही है फोन पर कम्प्लेन्ट कर तेरी प्राब्लम साल्व हो जायेगी अनु ने कहा सर कम्प्लेन्ट का प्रोसेस मुझे समझ में नहीं आ रहा है प्राजंल सर ने कहा तू अभी वही पर वेट कर में मोबाईल पर प्रोसेल डालता हूँ अनु की जब ये बातचीत चल ही रही थी बैंक की सी.सी.टी.वी देख ए.टी.एम में आ पहुंची सेक्युरिटी के अधिकारी ने अनु के चेहरे को देखकर समझ लिया कि मेडम कोई बड़ी परेशानी में फंस गई है । सेक्योरिटी के अधिकारी को देशकर अनु ने अपना मोबाईल बंद करके सिक्योरिटी से कहा साहब आपकी ये क्या व्यवस्था है।

मेरे अकाउन्ट से पैसे निकल गये परन्तु 500/- गिड्डी ए.टी.एम मशीन में फंस गई अब में क्या करूँ ? सिक्योरिटी अधिकारी

अर्जुन सिंह ने कहा कि मेडम ये तो रोज ही फंसते रहते हैं अब एक उपाय करता हूँ पैसे निकल जायेंगे। अर्जुन ने एक तांबे का तार मशीन के पीछे से उठाया तांबे के तार से क्या पता क्या हो गया मशीन से कट-कट की आवाज आई और 500/- गिड्डी नीचे गिर गई अनु का चेहरा खिल उठा उसने 500/- की गिड्डी अपने बेग में डाली और सिक्योटी से थेंकयू बोलकर आगे बढ़ गई अनु ने अपनी स्कॉपिर्यो का गेट खोला डिग्गी में नोटों का बेग डालकर डिग्गी को लॉक कर दिया। ड्राइवर सीट पर बैठकर अनु ने चाबी फंसाई और सेल्फ दबाने से पहले बाहर आकर देखती है सामने सूरज सोने जैसा चमक रहा जब वह सूरज के सुंदर से रूप को देख रही थी तभी सूरज के सामने एक काली सी बदली आ गई जो सूरज की सुदंरता पर आवरण डाल रही थी।

ऐसा लग रहा था जैसे कोई सुंदर बाला की आइने में निहारते समय कोई फटीचर आइने में झलक रहा हो और उस बाला को सुन्दर सी चीज को प्रकट नहीं होने दे रहा हो अनु से अपने हार्न पर हाथ पटका स्कार्पियों का हाथ खूब तेज बज उठा तभी अनु की नजर गजानन पर पड़ी तभी अनु ने ओ कबाड़ी भाई हाथ सिक गये कि नहीं सिक गये तो जल्दी खड़ा हो मुझे अपनी गाड़ी निकालना है हटजा क्या मेरी तरफ गुर्राकर के देख रहा है तुझे समझ नहीं आ रहा है चल हट जल्दी हट ! गजानन ने एक बोरी अपने कंधो पर उठाई और गाड़ी के सामने जाकर खड़ा हो गया अनु ने कहा- अरे कबाड़ी तेरी क्या बदतमीजी है मैं कह रही हूँ कि तू गाड़ी के सामने से हट हट परन्तु तू दूर हटने का नाम नहीं ले रहा है। उल्टा गाड़ी के सामने और खड़ा हो गया। गजानन ने कहा मैडम आप अपनी गाडी निकाल लीजिये मुझे भी रोड पर खड़े होने का अधिकार है। गजानन की बात सुनकर अनु को तैश आ गया और वे गाड़ी का गेट खोलकर नीचे उतर गई बोलने लगी कैसा कबाड़ी आदमी है रोड़ का टैक्स हम गाड़ी वाले देते हैं और ये पागल सा आदमी मेरी गाड़ी के सामने खड़े होकर ये कहता है मेरा खड़ा होने का अधिकार है इसका अधिकार में अभी बताती हूँ मैडम तुम मुझे क्या बताओगी प्रेम से अगर तुम बोलती तब तो मैं हट भी जाता परन्तु तुमने जिस घमंड में आकर सीधा मुझे कबाड़ी बोला है अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि कबाड़ी की ताकत क्या हो सकती है। क्योंकि हर गाड़ी पर चलने वाला पैदल चलने वाले पर कीचड़ उछालकर ही चलता है वह भूल जाता है कि पैदल चलने वाला व्यक्ति भी कोई ऐसा हो सकता है जो धनाड्य होने के बावजूद भी अपने किसी कार्य वश पैदल चला रहा हो यह जरूरी नहीं है कि कोई महान पुरुष पैदल नहीं चल सकता हो और देखने में भी आता है कि कई बड़े-बड़े ऑफिसर नव धनाड्य वे मार्निंग वॉक पर निकलते हैं प्रायः बड़े-बड़े लोग भी अपनी डायबिटिज से निजात पाने अथवा हाटा के पेशेंट अपना

उच्च रक्तचाप रोगीगण डाक्टरों की सलाह पर रोग मुक्ति के लिये मार्निंग वॉक करते हैं और गाड़ी वाले की झिड़किया भी सुनते हैं जब ये अब बात गजानन कह रहा था तभी अनु ने कहा अरे फटीचर तू किस मुंह से मेरे साथ वाकयुद्ध कर रहा है ? तू अपने हालत तो देख महीनें में मुश्किल से दस हजार रूपये कमाता होगा चेहरे पर कालिख पुती है ठीक से मुंह तक तो धोया नहीं है फिर तू मुझसे मुंह लड़ाने की करतूत कर रहा है अरे भाई। जरा तो सोच तुझे मेरे साथ मुंह लड़ाने का परिणाम क्या होगा इसका अनुमान भी तुने कभी नहीं लगाया अगर तूने मेरे एक शब्द भी गलत बोल दिया तो तेरी धुनाई इतनी होगी कि जीवन भर तू कहता रहेगा हलुवा भी खाने में तेरे आंसु टपकेंगे।

अनुकी बातें सुनकर गजानन जरा सा भी विचलित नहीं हुआ और वह कहने लगा अरे मैडम जा तू अपनी गाड़ी ओर कहीं से निकाल ले मैं हटने वालों मे से नहीं हूँ। रहा सवाल मेरी औकात का जो कभी आप मेरे ऑफिस में आ जाना मैंने तुम जैसी कई लड़कियों को सिर्फ रिसेप्शन सेंटर पर बिठाकर रखा है तुम्हें में अपनी असलियत बताना नही चाहता हूँ तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अपनी गाड़ी रिवर्स कर निकाल लो अनु बोली सुन कबाड़ी तुझे बहुत बड़ी-बड़ी बातें आती हैं लगता है कि तूम पूरी फिल्मी दुनिया में घूमकर आया है या कहीं न कहीं तूने अच्छे बड़े आदमी बनने के सपने देखे हैं अरे इतने पैसे वाला होता तो ऐसे फटे गंदे कपड़े नहीं पहनता और तेरी आँखों के सपने में कई अप्सरायें नाच रही होती बड़ा ताज्जुब हो रहा है कि लोग प्रायः नींद आने के बाद बंद आँख से सपने देखते हैं पर तू कबाड़ी खुली आंख से सपना देख रहा है देख अभी तेरी औकात का नाप-तौल करा देती हूँ देखों में फोन लगाती हूँ और थानेदार साहब स्वयं आ जायेगें और तेरी टांगो पर चार डंडे चिपकायेंगे तू लगड़ाता हुआ मेरी गाड़ी को छोड़कर सड़क किनारे खड़ा हो जायेंगा और में तेरी दयनीय हालत पर मुस्कुराती हुई गाड़ी लेकर चली जाऊँगी एक झटके से अनु ने अपने पर्स में से मोबाईल निकाला।

जब अनु मोबाईल से नम्बर लगा रही थी तभी गजानन ने कहा देख भाई- थानेदार को बुला रही है तो बुलाले परन्तु तू उन्हें ये बता दे कि थानेदार से काम चलेगा नहीं आई.जी. को बुलाना पड़ेगा तभी ये बंदा हटेगा अनु ने कहा जिसके कपड़े तक ढंग के नहीं है वो आई.जी. की बात कर रहा है और अनु खूब जोर से हंसने लगी अनुकी हंसी देखकर गजानन ने कहा हंस लो अभी तुम्हारा हंसने का समय है जब तुम्हें मेरी असलियत पता लगेगी तो दाँतों तले उँगली दबाने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकोगे क्योंकि कुछ हीरे गले हार में लगे होते हैं तो कुछ हीरे धूल मे पड़े-पड़े कुछ समय को धुंधले हो जाते हैं परन्तु जौहरी की एक नजर पड़ते ही धूल भरे हीरे नगीनों के हीरे बन जाते हैं।

अनु ने कहा- अपने आप को हीरा कहने वाले तुम कितने शेखचिल्ली बन रह हो अब मुझे गुस्सा तो चढ़ाओ मत नहीं तो में तेरे हटने पर तेरे ऊपर से गाड़ी चढ़ाकर निकाल दूंगी मगर रिक्स नहीं करूँगी।

कबाड़ी कहीं का, थोथा चना, बाजे घना जैसा हालकर रहा है तू खैर कोई बात नहीं जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की और भागता है अब तेरी मौत ही आ गई तो मैं क्या कर सकती हूँ लो अब तू चला जा स्वर्ग तेरी लाश उठाने वाले नहीं मिलेंगे यही तेरी लाश पड़ी रहेगी।

अनुकी गुस्सा को देखकर गजानन बिल्कुल विचलित नहीं हुआ और कहने लगा तेरी हिम्मत हो तो तू मेरे ऊपर से गाड़ी निकाल नहीं तो तू अब मेरा खेल देख अनु स्टेरिंग पकड़कर अपने माथे को स्टेरिंग पर ही टिकाकर बैठ गई और सोचने लगी किस हलकट व्यकित से मेरा पाला पड़ा है इतना ढीठ आदमी तो मैंने कही देखा ही नहीं कुछ देर के लिये सोचने लगी इस फटे हाल में ऐसा तो नहीं कोई वाकइ में बड़ा आदमी हो नीचे उतर अनु ने अपनी बात का लहाजा बदला और कहने लगी भैया मुझे क्यों परेशान कर रहो हो ? प्लीज हट जाओ न। एक ही अनुनय विनती सुनकर गजाननद बोला अगर तुमने मेरा अपमान नहीं किया होता मुझे प्रेम से बोला होता तो मैं पहली बार में ही हट जाता बस एक ही बात में मैडम तुमने कहना चाहता हूँ कि तुम होगी कोई रईस घराने की परन्तु किसी को गरीब या दलित समझकर उसका अपमान करना छोड़ दो मैं एक जमीन से उठा हुआ आदमी हूँ तुम मेरे कपड़े पर मत जाओ मैंने अपनी माँ की कैंसर की जैसी बीमारी का ईलाज कराने के लिये कर्ज लिया और कबाड़े का काम शुरु कर दिया और इसी कबाड़े का काम करते करते में करोड़पति बन गया पर मैने कबाड़े बीनने का काम नहीं छोडा क्योंकि व्यक्ति जिस रोजगार से ऊपर उठे उसे कभी नहीं छोडना चाहिये इयलिसे मैंने करोड़ों की जायदाद इकट्ठा करने के बाद भी कबाड़े का काम नहीं छोडा ओर अब में तुम्हें दिखाता हूँ कि इस बोरी में क्या है ? इस बोरी में मैडम इतना पैसा है कि अभी हाल चार स्कोर्पियों खड़े-खड़े खरीद लूंगा और गजानन ने बोरी उलटी कर दी नोटों की गड्डी देखकर अनु के होश उड गये और वह मान गई कि मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है।

अनु बोली भैया मुझे माफ करना मैं तो सिर्फ दस हजार की नौकरी करती हूँ ये गाड़ी भी मेरी नहीं है मेरे बॉस की है मुझे क्या पता था कि तुम्हारे पास कैश इतना सारा पैसा है परतु भैया बात तो बताओ ऐसे फटे कपड़े पहनकर तुम क्यों घूमते हो ? अरे मेडम क्या सूट बूट पहनकर कबाड़े का काम किया जा सकता है कबाड़े का काम तो पुराने कपड़े पहकर किया जा सकता है असल में हूँ तो मैं कबाड़ी प्यार से लोग मुझे अज्जु कबाड़ी कहते हैं।

हमारे गौरव

अमर शहीद वीर सातप्पा टोपण्णावर

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

कडवी शिवापूर मात्र 1500 लोगों की आबादी वाला कर्नाटक का एक गांव जहां 1914 में सातप्पा का जन्म एक सामान्य जैन किसान परिवार में हुआ।

सातप्पा कि उम्र मात्र 16 साल थी, उन दिनों सविनय अवज्ञा आंदोलन देश में चल रहा था। इस आंदोलन में जगह-जगह स्वयं सेवक संघ बनाये जा रहे थे। बालक सातप्पा ने भी अपना नाम मुरगुड के एक दल में लिखा, और यहीं से शुरु हुई उसकी क्रांतिकारी यात्रा जिसने 1942 में देश के लिये सर्वस्व समपर्ण कराकर ही विराम लिया।

राष्ट्रीय जन-जागरण के लिये सातप्पा निरन्तर गतिशील रहे। पास पडोस के ग्रामों में जन-जागरण का संदेश पहुँचाने का काम उन्हें सदैव सौंपा जाता रहा। धीरे-धीरे अपने गाँव कडवी शिवापूर के लोगों को तैयार कर उन्होंने एक स्वयंसेवक पंथ बना लिया।

सन्मती (मराठी)में लिखा है करीब 28 साल का उत्साही हो तगडा लडका सातप्पा केवल कडवी शिवापूर ही नहीं बल्कि मुरगुड का भी भूषण था।

1942 के भारत छोडो आंदालन में करो या मरो आन्दोलन का नारा बापू ने दिया उन्हें 9 अगस्त को गिरफ्तार कर लिया गया। तो जनता अपने विवेक के अनुसार आंदोलन चलाने लगी। जगह- जगह जुलूस-धरना-गिरफ्तारियाँ आम बात हो गयी।

12 अगस्त 1942 को सातप्पा के नेतृत्व में भाव में जुलूस निकला सभी ने ग्राम पंचायत पर हमला बोल उस पर कब्जा किया वहां तिरंगा लहराया।

15 अगस्त 1942 को 50-60 युवकों की टोली गांव में सबेरे प्रभात फेरी निकाल रहे थे सातप्पा हाथ में तिरंगा लिये रैली का नेतृत्व सबसे सामने होकर कर रहे थे। तथा 50 बन्दूकधारी और 10-15 लाठी धारी पुलिस वहाँ पहुंचे। उन्होंने युवकों को घेरा। साक्षात मृत्यु सामने खड़ी थी पर युवकों का उत्साह क्षण भर भी कम न हुआ।

बड़ा ही हृदय-द्रावक दृश्य था वह पुलिस सातप्पा से बोली झंडा नीचे करो सातप्पा बोला प्राण गेला तरी बेहत्तर, पण झंडा खाली घेणार नाही, घेऊ देणा नाही इंधर सारे युवक गर्जना करने लगे।

तिरंगा झेंडयात्रा विजय असो

पुलिस ने मॉजिस्टेट का ऑर्डर दिखाया और झंडा नीचे करने को कहा।

सातप्पा गर्जा- चाहे जान भले ही जाये झण्डा नीचा नहीं करेगे।

यह सुनते ही पुलिस ने गोली चलाई सातप्पा को गोली लगी और अपनी धरती माँ के लिये वो शहीद हो गये।

क्रमांक-42 वरिष्ठ नागरिक

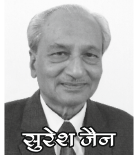

शानदार जिन्दगी-शानदार मृत्यु

दस सूत्र अच्छी शानदार जिन्दगी गुजार कर शानदार मृत्यु को गले लगाना।

1. अच्छा स्वास्थ्य- यदि आप पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हैं, तो आपकी खुशियाँ नहीं रह सकते। बीमारी छोटी हो या बड़ी, वह आपकी खुशियां छीन लेती है, इसलिये सदा अपनी सेहत पर ध्यान दें।

2. ठीक ठाक बैंक बैलेंस- अच्छी जिन्दगी जीने के लिये बहुत अमीर होना जरूरी नहीं, परंतु इतना पैसा बैंक में हो कि आप जब चाहे बाहर खाना खा पाएं, सिनेमा देख पायें, समुद्र और पहाड़ों पर घूमने जा पाएं, तो आप खुश रह सकते हैं। उधारी में जीना आदमी को खुद की निगाहों में गिरा देता है।

3. अपना मकान- मकान चाहे छोटा या बड़ा वो आपका अपना होना चाहिये। यदि उसमें छोटा सा बगीचा हो तो आपकी जिंदगी बेहद खुशहाल हो सकती है। यदि बगीचे के लिये जगह न हो तो कुछ फूलों के गमले लगा लें । यह आप को कुदरत के समीप होने का अहसास देंगे। अपनी छत आपको बादशाह बनाकर रखेगी।

4.समझदार जीवन साथी- जिनकी जिंदगी में समझदार जीवन साथी होते हैं, जो एक दूसरे को ठीक से समझाते हैं, उनकी जिंदगी बेहद खुशहाल होती है, वर्ना जिंदगी में सबकुछ धरा का धरा रह जाता है, सारी खुशियां काफूर हो जाती हैं। हर वक्त कुढ़ते रहने से बेहतर है, जो मिला है उससे एडजस्ट होकर खुशी प्राप्त करें।

5. दूसरों की उपलब्धियों से न जलना- कोई आपसे आगे निकल जायें, किसी के पास आप से त्यादा पैसा हो जाए, तो उससे जले नहीं , दूसरों से खुद की तुलना करने से आपकी खुशियां खत्म होने लगती है।

6. गप से बचना- लोगों को गपशप के जरिए अपने हर हाबी मत होने दीजिये। जब तक आप उनसे छुटकारा पायेंगे, आप बहुत थक चुके होंगे और दूसरी की चुगली-निंदा से आपके दिमाग में कही न कहीं जहर भर चुका होगा।

7. अच्छी आदत- कोई न कोई ऐसी हाबी विकसित करें, जिसे करने में आपको मजा आता हो, मसलन गार्डेनिंग, पढ़ना, लिखना, डाक टिक संग्रह करना, फोटोग्राफी करना इत्यादि। फालतू बातों में समय बर्बाद करना जिंदगी के साथ किया जाने वाला सबसे बड़ा अपराध है। कुछ न कुछ ऐसा करना चाहिये, जिससे आपको खुशी मिले और उसे आप अपनी आदत में शामिल करें नियमित रूप से करें।

8. ध्यान- हर रोज सुबह कम से कम दस मिनिट ध्यान करना चाहिये। यह दस मिनिट

आपको अपने ऊपर खर्च करने चाहिये। इसी तरह शाम को भी दस मिनिट ध्यान करें, यह वक्त आप अपने साथ गुजारे। इस तरह आप खुद को जान पायेंगे।

9. क्रोध से बचना- कभी अपना गुस्सा जाहिर न करें । जब भी आपको लगे कि आप का दोस्त आपका रिश्तेदार आपके साथ तल्ख हो रहा है, तो आप उस वक्त उससे दूर हो जायें, बजाये इसके वही उसका हिसाब-किताब करने पर आमादा हो जायें।

10. अंतिम समय- जब यमराज दस्तक दे, तो बिना किसी दुःख शोक या अफसोस के, अंतिम यात्रा पर खुशी-खुशी उसके साथ निकल पड़ना। शोक, मोह के बंध से मुक्त होकर जो, यहाँ से निकलता है, उसी का जीवन सफल होता है।

शरीर में कालीफास्फोरिकम का महत्व
काली फास्फोरिकम स्वस्थ्य रहें हर दम

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

हमारे शरीर में प्रमुख रूप से 12 खनिज तत्वों में काली फास्फोरिकम भी एक अति महत्वपूर्ण तत्त्व है । यह शरीर के सभी अंगों और तन्तुओं (Tissue) विशेषतः दिमाग वातनोडियों व शरीर के पोषण करने वाली सभी तरलों में पाया जाता है। यह शरीर के रक्त कोषों 100 भाग में 2.343 ग्राम तक पाया जाता है।

कार्य-1. यह तन्तु (Tissue) निर्माण के लिये अनिवार्य तत्त्व है व तन्तुओं में होने वाले विनाश या ह्रास को रोकता है।

2. स्नायु जाल (Nervous System) सम्बेदी स्नायुजाल (Sympathetic Nervous System) के लिये सर्वाधिक उपयोगी तत्त्व है जो स्नायु दुर्बलता व स्नायुजाल की दोषपूर्ण अवस्था को सुधारता है।

3. यह मस्तिष्क कोष्ठकों (Cells) का प्रमुख घटक है जो मस्तिष्क संबंधित मानसिक व्याधियों को होने से रोकता है जिसमें मानसिक व शारीरिक अवसाद (डिप्रसेन) दीर्घ काली चिन्ता, भीषण दुख, दुव्यसनों के शिकार होने से रोकता है।

4. स्मृति लोप, व्यवसाय नौकरी संबधित भारी निराश, विद्यार्थियों, थके मांदे, लोगों का सिरदर्द, अनिंदा, लज्जा बातचीज करने में अरूचि, आलस, चिडचिडापन आदि में आश्चर्य जनक रूप में कार्य करता है।

5. डाइबिटिज नियंत्रण करता है।

कमी- जब शरीर में इसके परमाणुओं का संतुलन बिगड़ जाता है तो उपरोक्त कार्यों की कार्य कुशलता में व्यवधान उत्पन्न हो जाता है जिससे निम्नानुसार लक्षण उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है।

1. नाड़ी की गति कम हो जाती है एवं बाद में सुस्त पड़ जाने से वेदनशील वातनाडियाँ पेशियों में दर्द, मांस पेशियों ढीली पड़ जाना व लकबा मार गया हो।

2. संक्रामक रक्तस्त्राव, अतिसार जिसमें मल में तेज गंध टायफाइड जैसी हालत, आतशय का घाव (सिलिलिस) फोडे सड़कर बदबू देने लगते हैं दांतों में बदबू आना आदि।

3. नींद में चलने की समस्या, श्वास रोग, परिश्रम में दम फूलना आँखों में भारी थकान, नजर धुंधली, पास की वस्तुयें स्पष्ट दिखाई नहीं देना, आँखों के सामने काले मुनगेये पतंगे उड़ना, ऊपर से नीचे गिरने का भय उत्पन्न होना।

4. बड़ी आयु के बच्चों में पेशाब अपने आप निकल जाना, पेशाब पीला, बच्चे सोते समय डरें

व गहरी नींद में चीख मारना, डर रोने की इच्छा व बच्चों का स्कूल से घर आने की इच्छा होना।

5. मन में भीरुता, लज्जा, व्यग्रता, भय, आंसू बहाना, व्याकुलता, स्मरण शक्ति का अभाव तथा खिन्नता आदि।

6. हृदय की दुर्बलता, सिर चकराना, अनिद्रा, मानसिक थकान, डिप्रेसन।

उपचार- 1. काली फास्फोरिकम का उपयोग, लम्बे समय से तनाव, मनोवैज्ञानिक प्रभाव से पीड़ित, तंत्रिकाओं और मस्तिष्क के लिये टॉनिक के रूप में उपयोग होता है

2. पीड़ित तंत्रिकाओं, नींद अनुभव करना परन्तु नींद न आना, अस्थमा रोग, पक्षाघात (लकवा) उन्माद, चिन्ता अवसाद ग्रस्त को दूर करने में, माइग्रेन व डाबिटिज नियंत्रण।

3. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने, ध्यान केन्द्रित करने, स्वभाव में चिडचिडापन को ठीक करता है, प्रसूति भय।

4. शरीर में कैल्शियम की मात्रा नियंत्रित करने में मदद, हड्डियों के जोड़ों की अकड़न सुन्नता कमजोरी और वजन में बदलाव नियंत्रण को उपयोगी है।

उपलब्धता- केला , संतरा, खरबूज

अधिकता- किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं, गर्भावस्था में भी उपयोग किया जा सकता है।

विशेष- 1. यह तत्त्व भूत प्रेत बाधा संबंधी बाधा की अवधारणा के प्रति अविश्वास सिद्ध करता है।

2. सांस लेते समय प्राणवायु और अन्य गैसों तथा रक्त में जो भी रासायनिक परिवर्तन होते हैं काली फास्फोरिकम की उपस्थिति के कारण होते हैं।

3. पैक्रियाज में इन्सुलिन बनाने की क्रिया बंद हो जाने पर यह पैंक्रियाज की लेंगर्हेन्स ग्लैड (Langerhans Gland) की कोशिकाओं की सक्रिय कर इन्सुलिन बनाकर डाइबिटीज नियंत्रण कार्य करता है।

काली फास्फोरिकम तत्त्व जो सिर से पैर तक शरीर की सभी शिकायतों को दूर करते हुये संपूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास करके हर दम स्वस्थ्य बनाये रखता है।

हास्य तरंग

1. एक अनजान युवक एक महिला के पीछे हाथ धोकर पड़ा था। तंग आकर उसने अपनी सहेली को बताया। सहेली ने कहा वह तुम्हारे पीछे हाथ धोकर पड़ा है, तुम भी अपना मुंह धोकर दिखा दो अपने आप खुद ही पीछा छोड देगा।

2. शादी के बाद ससूराल में नई दुल्हन मोबाईल पर रेसीपी देखकर नाश्ता बना रही थी। सांसू ने शाम को फ्रीज खोलकर देखा था उसमें एक नया घंटा रखा था उसने बहू से पूंछा तो बहू ने बताया कि सभी चीजें मिलाकर एक घंटा फ्रीज में रख दो।

3. भावित- मम्मी से क्या आज सब्जी में मसाला नमक आदि नही डाला है। मम्मी गुस्से में देखकर कहती है तुम मोबाईल देखने में इतने खो गये हो सब्जी की जगह पानी के गिलास में रोटी डालकर खा रहे हो।

4. टीचर-क्लास में एक नेताजी के बच्चे से पूंछती है पिछले सप्ताह बाढ व सूखा के बारे में बताया था तो दोनों में क्या अंतर है ? बच्चा-टीचर जी मेरे पापा बाढ़ के समय हेलीकाप्टर से व सूखा के समय जीप से दौरे पर जाते है।

5. एक युवक मंदिर जी में गणेश भगवान के सामने बैठकर भक्ति कर रहा था। कुछ समय बाद तेज आवाज गूंजी भक्त मैं प्रसन्न हुआ। मांगो वर युवक, आप भी कन्फ्यूज हो मुझे तो वधु चाहिये।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

सांभर

साम्रगी:1/4 तुअर दाल, 2 चम्मच तेल, 1/2 चम्मच राई, 1 चम्मच उड़द दाल, 1/2 चम्मच जीरा, 1 सहजन की फली, 2 टमाटर, 1/2 चम्मच हल्दी पाउडर, 1 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 5 कड़ी पत्ते, स्वादानुसार नमक, स्वादानुसर गुड़ कूटा हुआ, 3 चम्मच इमली पानी, 1/4 कप लौकी

विधि:कूकर में तेल गरम करे उसमें खड़ी मिर्च, राई, उड़द चना और कड़ी पत्ते का तड़का दे। इसी बीच में सांभर के बघार की तैयार कर ले। बर्तन में तेल डालकर गरम करें उसमें राई, हरी मिर्च के टुकड़े, लाल मिर्च के टुकड़े, कड़ीपत्ते, हींग डालकर पकाएं और सांबर मसाला, सौंठ मसाला, टमाटर, लौकी, डालकर थोड़ा सा इमली का पानी, गुड़ भी डालकर पकाएं। अब कटी सब्जिया तुआ दाल धोकर, नमक, हल्दी, मिर्च सांबर मसाला चुटकीभर चीनी डालकर 4 से 5 मिनट भूनकर 2 गिलास डालकर 4 सिटी लगा ले खोलकर इमली का पानी डालकर उबाल आने दे।

इसी बीच में सांभर के बघार की तैयारी कर ले। बर्तन में तेल डालकर गरम करे और उसमें राई, हरी मिर्च के टुकड़े, कड़ीपत्ते, हींग डालकर पकाएं और सांभर मसाला, सौंठ पाउडर डालें। दाल की भाप निकल जाने पर उसको ठंडा हाने रख दे। सहजन की फली को डिब्बे से निकालकर अलग कर ले और बघाकर मिलाने के बाद सांभर में डाल दे।

बाल कहानी

साजिश

उत्तरप्रदेश के बागपत में आलोक त्यागी नाम का शिक्षक रहता था। उसके पिता जी और दादा जी शिक्षक पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके थे। आलोक त्यागी किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं करते थे। उनसे सभी लोग बात करने से डरते थे। आलोक ट्यूशन व कोचिंग की संस्कृति से बहुत नफरत करते थे। अतिरिक्त कक्षा निशुल्क रूप से आलोक पढ़ाते थे उनके पढ़ाने की कुछ शैली ही ऐसी थी कि बच्चे दौड-दौड कर उनकी कक्षा में पढ़ने आते थे जिससे आलोक की ख्याति पूरे बागपत में बढ़ती जा रही थी।

आलोक के मित्रों ने उसे समझाया था कि आलोक तेरे दुश्मन और ईर्ष्या करने वाले बढते चले जा रहे हैं। अभी भी मौका हैं तूँ अपनी अतिरिक्त कक्षा बंद कर दें अन्यथा किसी भी दिन तूँ किसी भी साजिश का शिकार हो सकता है। आलोक ने अपने हाथ से अपनी पीठ ठोक ली और कहा शाबास आलोक तेरे अंदर कोई योग्यता अवश्य आ गई हैं। जब कोई तुमसे ईर्ष्या करने लगे तब तय कर लेना कि तेरे अंदर कोई योग्यता गुणवत्ता जरूर पैदा हो चुकी है।

1 अक्टूबर की शाम को आलोक अपने भाषण तैयार करने में व्यस्त था कि तभी किसी ने उसका दरवाजा खटखटाया आलोक तब दरवाजा खोला तो पुलिस अधिकारी उसके घर आये उनके बैठने के लिये कुर्सी लेने अंदर गया था कि एक पुलिस मेन ने आलोक की बाईक में तमंचा रख दिया और चालाकी से खड़ा हो गया।

पुलिस अधिकारी आलोक के घर तलाशी लेने लगे इधर उधर की तलाशी लेने के बाद वे बाईक का पास पहुँचे डिग्गी खोली उसमें से तमंचा निकाल लिया आलोक को देखकर कहा आलोक जी आप पर अवैध हथियार रखने का मामला बनता हैं और आपको गिरफ्तार किया जाता हैं।

आलोक कहता हैं यह तो साजिश हैं उनकी बहिन संगीता त्यागी ने सी.सी.टी.वी कैमरे खंगलाना शुरु किया तो उसने पाया कि पुलिस के आदमी ने ही डिग्गी में तमंचा रखा संगीता मीडिया तक यह तथ्य भेजा तो बागपत के पुलिस विभाग की काली करतूत सबके सामने उजागर हो गई और साजिश का भंडा फोड हो गया।

संस्कार गीत

नाचे जो मन का मोर रे

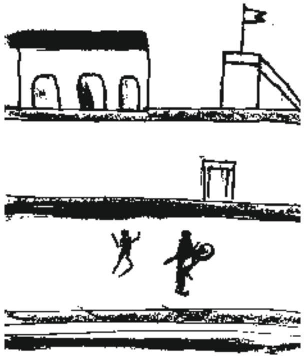

अरे नाचे जो मन को मोर रे
नाचे जो मन को मोर रे
शिरपुर में अब बजे बधैय्या
नाचे जो मन को मोर रे
1.
संकट मोचक पार्श्वनाथ की
महिमा अपरंपार है
अंतरीक्ष पारस को भजले
मिल जावे भव छोर रे
2.
कोड़ मिटे भव दुख हरे सब
पावे शिवपुर द्वार रे
सत्य जगे अरू झूठ टले सब
मिटे पाप तम घोर रे
3.
रूप दिगम्बर मन मोहक है
जिनवर पारस नाम रे
लज्जा घृणा परिषह जीते
दिगवासी चित् चोर रे

बाल कविता

चन्द्रप्रभु जी मन को भायें

चंद्रप्रभु जी मन को भाये
चंदा मामा से भी गौरे
चंद्रप्रभु जी भगवन मोरे
हमको सदा लुभाते हैं
अपने पास बुलाते हैं
शुभ्र सदा ही जिनकी काया
नहीं पास में जिनके माया
रूप दिगम्बर सदा सलौना
वीतराग मय भाव खिलोना
तुम दुनिया के चंदा मामा
पाया तुमने शिवपुर धामा
सम्मेद शिखर उच्च विराजे
चंद्रप्रभु जी मन को भाये।

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

राजाखेड़ा (राजस्थान)- आचार्य श्री सुलभसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. चंदेश भैया अशोकनगर को मुनि दीक्षा दिनांक 21 जुलाई 2024 को राजाखेड़ा राजस्थान में दी गई। जिनका नाम मुनि श्री सरलसागरजी महाराज रखा गया।

सम्मेदशिखर जी- आचार्य श्री विवेकसागरजी महाराज के करकमलो से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सुमतिसागर आश्रम मधुवन सम्मेदशिखर जी में नरेन्द्र जैन इटारसी को क्षुल्लक दीक्षा 11 अगस्त 2024 को पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक पर दी गई। जिनका नाम क्षुल्लक अजेयसागरजी महाराज रखा गया।

रहली- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटनागंज रहली में निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर महाराज जी के करकमलों से दिनांक 19 अगस्त 2024 रक्षाबंधन के दिन क्षुल्लक सुधारसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री चैत्यसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री अपारसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री तन्मयसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री स्वागतसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री आगतसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री भारतसागरजी महाराज को एलक दीक्षायें दी गई जिनके नाम वहीं रखे गयें।

कुलचाराम (हैदराबाद)- आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुलचाराम मेढ़क हैदराबाद तेलंगाना में पंडित श्री शिवचरणलाल मैनपुरी को क्षुल्लक दीक्षा 19 अगस्त 2024 को रक्षाबंधन के दिन दी गई। जिनका नाम क्षुल्लक श्री वांग्मयसागरजी महाराज रखा गया।

कुंथुगिरि (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री कुंथुसागर महाराज जी के करकमलों से 22 अगस्त 2024 को ब्र. अनुभव भैया बड़ागांव निवासी सीकर को क्षुल्लक दीक्षा दी गई जिनका नाम क्षुल्लक श्री आर्यनंदी जी महाराज रखा गया।

आगामी दीक्षायें

सम्मेदशिखर जी- आचार्य श्री विहर्षसागर जी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तेरापंथी कोठी मधुवन सम्मेदशिखर जी जिला गिरिडीह झारखंड में 12 अक्टूबर 2024 दशहरा के दिन 11 दीक्षायें दी जायेगी। 2 क्षुल्लक जी, प्रिया दीदी भिंड, नीतू दीदी बीना, हरिशचंद जी इंदौर, सुनील सेठी इंदौर, राहुल भैया ग्वालियर, रितिक भैया भिण्ड, शोभा जी गुडगांव, भगवान देवी शिखरजी, चम्पादेवी शिखरजी को दीक्षायें प्रदान की जायेंगी।

नोएडा (उ.प्र.)- आचार्य श्री सौभाग्य सागर महाराज जी के करकमलों से सेक्टर 27 नोएडा (उ.प्र.) में 17 अक्टूबर 2024 शरदपूर्णिमा के दिन क्षुल्लिका शुभमार्गमति माताजी, ब्र. अशोक भैयाजी, ब्र. साधना दीदी जी को दीक्षायें दी जावेंगी।

दिल्ली- आचार्य श्री विमर्शसागरजी

महाराज करकमलों से दिल्ली में 12 नवम्बर 2024 को 13 दीक्षायें दी जावेगी। जिनके नाम प्रवीण भैया कुड़ी बागपत (उ.प्र.), विशु दीदी चंदेरी, नेहा दीदी अशोकनगर, ज्योति दीदी दिगोडा, रिया दीदी कोलारस, दीपा दीदी शिवपुरी, महिमा दीदी जतारा, सृष्टि दीदी अशोकनगर, सोनाली दीदी खरगापुर, रीता दीदी सरधना, गुंजन दीदी कोलारस, प्रतिक्षा दीदी रामपुर मथुरा, मिजवती दीदी कस्बाथाना (म.प्र.) को दीक्षायें दी जावेंगी।

समाधिमरण

कटक-गणिनी आर्यिका विदुषीश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में कटक उड़ीसा में 30 जुलाई 2024 सांय 7.29 मिनिट पर आर्यिका विश्वासामश्री माताजी का समाधिमरण हुआ।

जबलपुर- आर्यिका श्री आदर्शमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लक श्री समकित सागरजी महाराज का समाधिमरण 01 अगस्त 2024 को दयोदय तीर्थ तिलवारा जबलपुर में हुआ।

डिग्गी टोंक (राजस्थान)- आचार्य श्री इंद्रनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर डिग्गी टोंक राजस्थान में मुनि श्री क्षमानंदी महाराज का समाधिमरण 04 अगस्त 2024 को हुआ।

नेमावर-निर्यापक श्रमण मुनि श्री वीरसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र नेमावर में 12 अगस्त 2024 सोमवार को क्षुल्लक श्री चिंतनसागर महाराज जी का समाधिमरण हुआ।

युगल भाईयों की पी.एच.डी. सम्पन्न

जैन जगत में पं. सुरेश जैन मारौरा एक सुपरिचित नाम है। आपके युगल पुत्रद्वय सुबोध मारौरा एवं सुजश मारौरा द्वारा हाल ही में एक साथ पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर जैन साहित्य को गौरवान्वित किया है। दोनों भाइयों को धार्मिक संस्कार विरासत में प्राप्त हुये है। आपने तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (T.M.U.) से अपना शोधकार्य पूरा किया है। ज्ञात हो कि पूर्व में पं. सुरेश जैन मारौरा की सुपुत्री ब्र. समता दीदी एवं पुत्रवधु डॉ. अल्पना (शुभि) भी जैन दर्शन में अपनी पी.एच.डी. सम्पन्न कर चुके हैं। इस प्रकार अब मारौरा परिवार के चार सदस्य पी.एच.डी. होंगे एवं अपने धर्मकार्यो के साथ जैन दर्शन विषय पर अपना शोध कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है।

डॉ. सुबोध मारौरा ने **भारतीय संस्कृति में जैन पत्र-पत्रिकाओं एवं जैन पत्रकारों का योगदान एवं प्रभाव** विषय पर अपना शोधकार्य डॉ. ज्योति पुरी Associate Dean Ph.D. TMU के निर्देशन में अपना शोधकार्य पूरा किया है। लौकिक शिक्षा में डॉ. सुबोध ने M.B.A.(Marketing), M.A (Prakit), Master of Journalism (M.J.) किया हुआ है। आप पत्रकारिता जगत से सम्बन्ध रखते हैं और कई पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल के सदस्य होने के साथ-साथ विभिन्न समसामायिक विषयों पर लेख लिखते रहते हैं। पूर्व में आपका जैन पत्रकारिता पर लघु शोध प्रबंध देवी अहित्या विश्वविद्यालय इंदौर से प्रकाशित हुआ है।

डॉ. सुजश मारौरा अपनी प्रोफेशन सर्विस में व्यस्त रहने के साथ निरन्तर अध्ययनशील है, उन्होंने अपना शोधकार्य **मुनि क्षमासागर जी के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन** विषय पर जैन जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. फूलचन्द जी (प्रेमी) के निर्देशन में पूर्ण किया है। लौकिक शिक्षा में डॉ. सुजश जैन M.C.A., M.A. (Prakrit) किया हुआ है एवं नोएडा में सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। आप एक कुशल मंच संचालक हैं तथा देव शास्त्र गुरु के प्रति अत्यन्त श्रद्धावान हैं।

मौरारा परिवार द्वारा किये जा रहे उक्त कार्यो की प्रशंसा करते हुये अनेक स्नेहजनों ने बधाई एवं शुभकामनायें दी है।

प्रेषक- इंजी. अभिनन्दन जैन, जैतहरी
मो. 7566547450

वर्ग पहेली 299

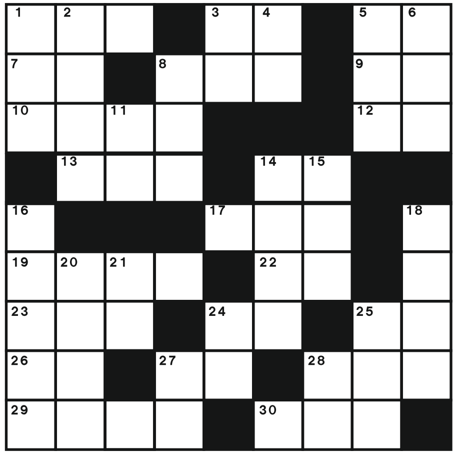

बाये से दाये

1. म.प्र. का एक जिला भगवान शीतलनाथ की जन्मस्थली -3
3. बन्दर, वानर, मर्कट -2
7. मीठा फल खिरनी -2
8. यीस्ट, कवक -3
9. बड़ाच विशाल, महान -2
10. टमेटो, लाल रंग का खट्टा फल -4
12. श्रृंखला, युवक, लड़का -2
13. नया, नवीन, नूतन -3
14. तपस्या, इच्छा निरोध -2
17. बदरूप, विद्रूप, असुन्दर -3
19. औस, औसबिन्दू, -4
21. ईसाई साध्वी -2
22. बड़ा शब्द का स्त्रीलिंग -2
23. लक्ष्मण जी का एक नाम -3
24. गीला आर्द्र -2
25. झुका हुआ -2
26. नष्ट हुआ विनष्ट -2
29. राजा, भूपति, भूप -4
30. देश, राष्ट्र -3

ऊपर से नीचे

1. विशाल, बड़ा, उदार -3
2. दिवसमान, दिन का नाम -4
3. खालीपन, अल्पता, न्यूनता -2
4. करूणा, दया -2
5. नम्र, नरम -3
6. पर्यत शैल -3
11. तबेला, पानी का पात्र -2
14. वृक्ष -4
15. छोटा पापड़ -3
16. दश धर्म का पर्व, पर्यूषण पर्व -5
18. छोटा पन, कमतर, सबसे छोटा -4
20. कवच अंगरखा उ.प्र. का एक शहर -4
24. अंधेरा, अंधकार -2
25. चक्ष, मंत्र, आँख -3
27. साधु, तपस्वी -2
28. महात्मा साधु -2

वर्ग पहेली 298 का हल

1 शि	2 र	3 पु	र		4 म	5 हि		6 ख
7 व	स	र		8 बा	द	ल		दा
पु			9 रा	त			10 दा	न
11 री	12 झ	13 ना		14 ब	15 द	ल	ता	
	16 ढ	र	17 का	ना		ह		18 स
19 अं	क		20 मा	ना		21 र	22 सि	क
23 त	ना				24 स		25 त	ल
री		26 ना	म		27 म	हा		
28 क्ष	ल	ता		29 मो	क्ष	स	प्त	मी

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

मूल दिगम्बर रुप

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।

२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।

३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.

४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

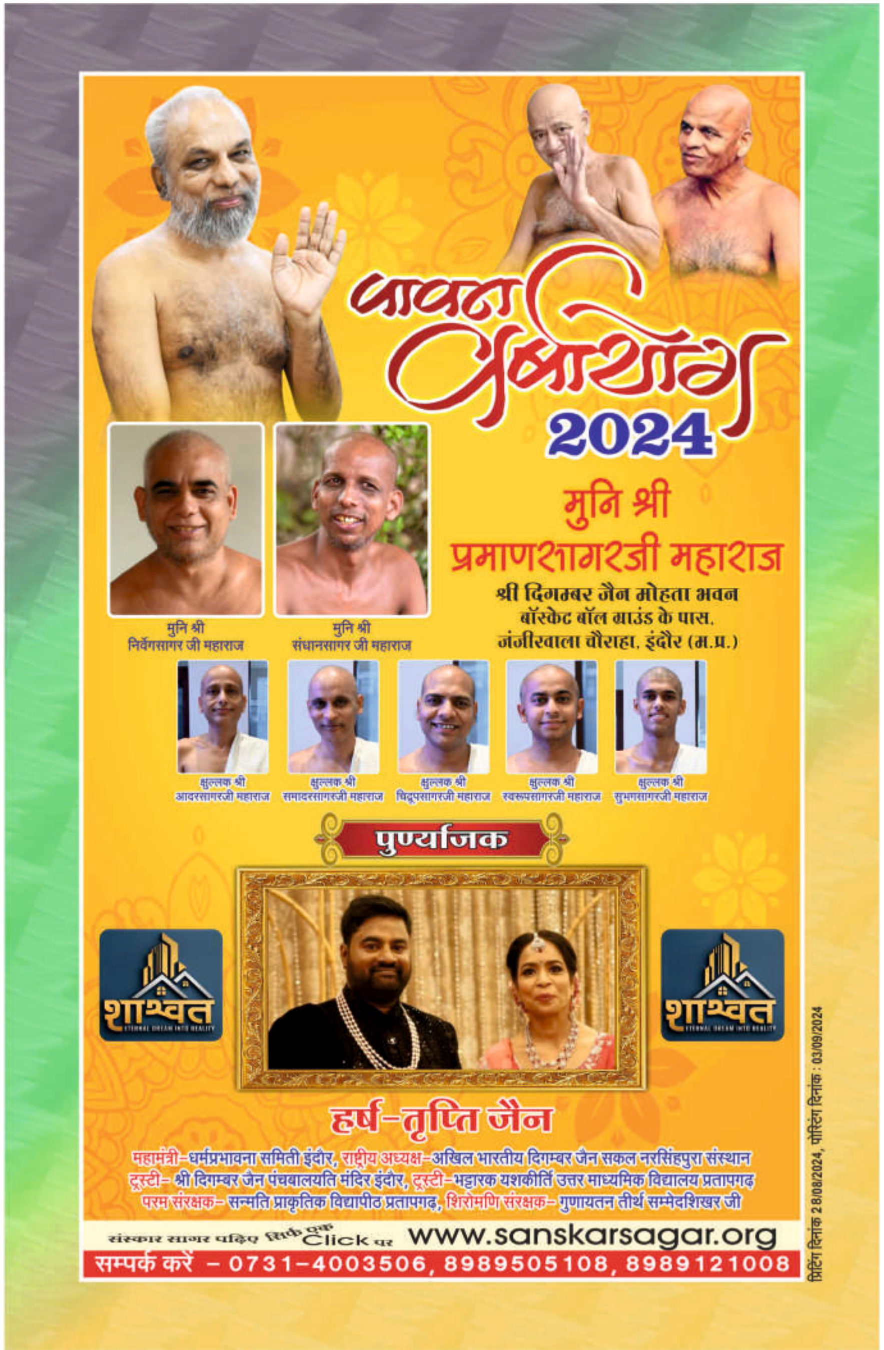
पावन वर्षायोग
2024
मुनि श्री
प्रमाणसागरजी महाराज
श्री दिगम्बर जैन मोहता भवन
बॉस्केट बॉल ग्राउंड के पास,
जंजीरवाला चौराहा, इंदौर (म.प्र.)
मुनि श्री
निर्वेगसागर जी महाराज
मुनि श्री
संधानसागर जी महाराज
क्षुल्लक श्री
आदरसागरजी महाराज
क्षुल्लक श्री
समादरसागरजी महाराज
क्षुल्लक श्री
चिद्रूपसागरजी महाराज
क्षुल्लक श्री
स्वरूपसागरजी महाराज
क्षुल्लक श्री
सुभगसागरजी महाराज
पुण्यार्जक
शाश्वत
शाश्वत
हर्ष-तृप्ति जैन
महामंत्री-धर्मप्रभावना समिति इंदौर, राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन सकल नरसिंहपुरा संस्थान
ट्रस्टी- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर, ट्रस्टी-भट्टारक यशकीर्ति उत्तर माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़
परम संरक्षक- सन्मति प्राकृतिक विद्यापीठ प्रतापगढ़, शिरोमणि संरक्षक- गुणायतन तीर्थ सम्मेदशिखर जी
संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008
प्रिंटिंग दिनांक 28/08/2024, पोस्टिंग दिनांक : 03/09/2024